लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

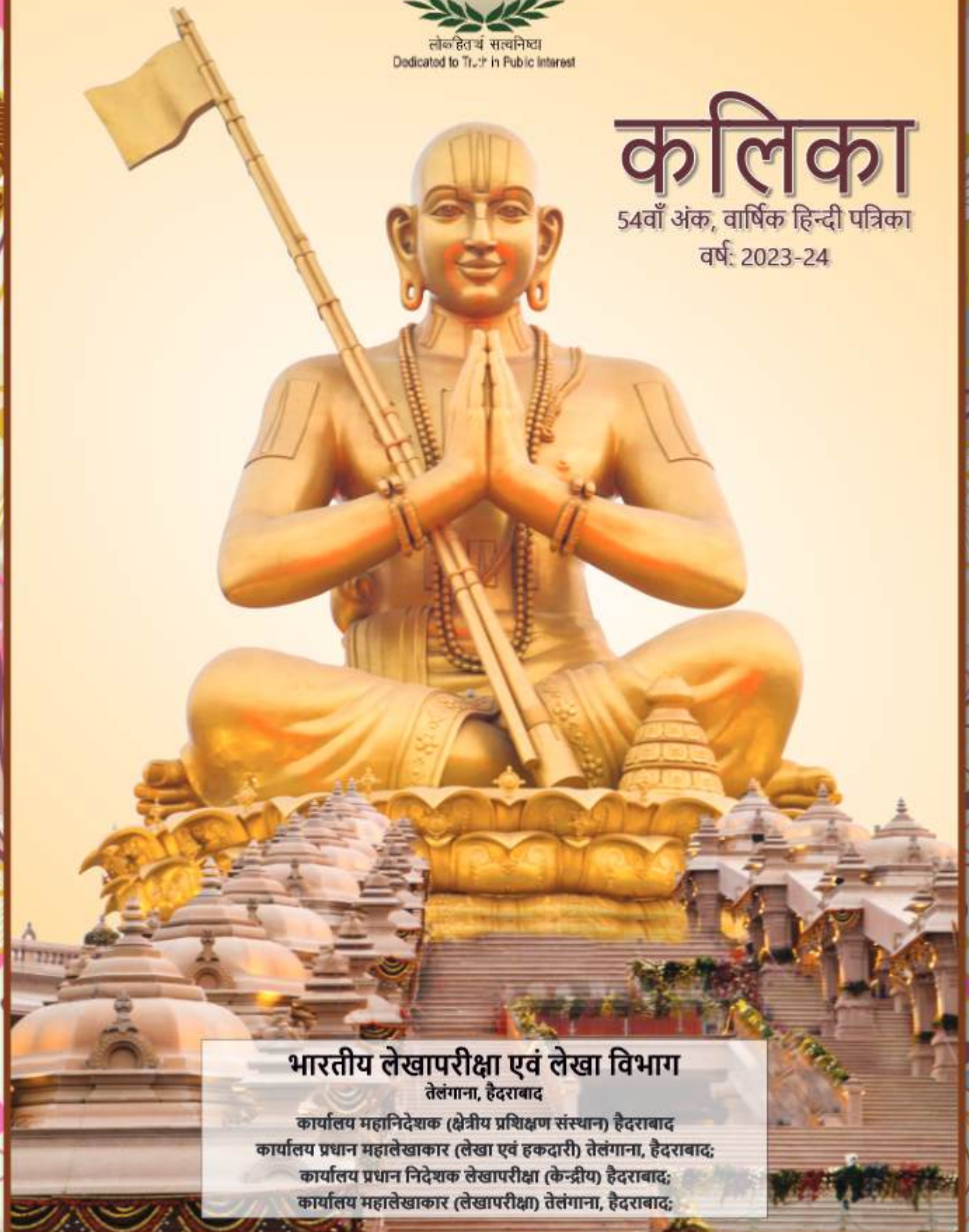

कलिका

54वाँ अंक, वार्षिक हिन्दी पत्रिका

वर्ष: 2023-24

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

तेलंगाना, हैदराबाद

कार्यालय महानिदेशक (क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान) हैदराबाद

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना, हैदराबाद;

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) हैदराबाद;

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना, हैदराबाद;

STATUE OF EQUALITY

स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी 11वीं शताब्दी के भारतीय दार्शनिक आचार्य रामानुज की एक प्रतिमा है, जो हैदराबाद के बाहरी इलाके में रंगा रेड्डी जिले के मुचिंतल में चिन्ना जीयर ट्रस्ट के परिसर में स्थित है। यह दुनिया की दूसरी सबसे ऊंची बैठी हुई मूर्ति है। भारत के प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने 5 फरवरी 2022 को इसका उद्घाटन करते हुए इस स्मारक को देश को समर्पित किया था।

भारत की पवित्र भूमि ने कई संत-महात्माओं को जन्म दिया है। जिन्होंने अपने अच्छे आचार-विचार एवं कर्मों के द्वारा जीवन को सफल बनाया और कई सालों तक अन्य लोगों को भी धर्म की राह से जोड़ने का कार्य किया। ऐसे ही एक महान संत हुए श्री रामानुजम। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार उनका जन्म सन् 1017 में श्री पेरामबुदुर (तमिलनाडु) के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम केशव भट्ट था। जब उनकी अवस्था बहुत छोटी थी, तभी उनके पिता का देहावसान हो गया।

बचपन में उन्होंने कांची में यादव प्रकाश गुरु से वेदों की शिक्षा ली। श्री रामानुजाचार्य की पूजा पूरे देश में की जाती है। ख़ासकर उत्तरी और दक्षिणी भारत में उनके भक्त इस दिन को विशेष उत्सव के रूप में मनाते हैं। इस दिन श्री रामानुजाचार्य की शिक्षाओं को ध्यान में रख विशेष प्रार्थनाएं और संगोष्ठियों के सत्र आयोजित किए जाते हैं। हेरोल्ड कावर्ड ने रामानुज को "श्री वैष्णव शास्त्र के संस्थापक व्याख्याकार" के रूप में वर्णित किया है। वेंडी डोनिगर ने उन्हें "शायद भक्तिपूर्ण हिंदू धर्म का सबसे प्रभावशाली विचारक" कहा।

रामानुजाचार्य आलवंदार यामुनाचार्य के प्रधान शिष्य थे। गुरु की इच्छानुसार रामानुज ने उनसे तीन काम करने का संकल्प लिया था - ब्रह्मसूत्र, विष्णु सहस्रनाम और दिव्य प्रबंधनम की टीका लिखना। 16 वर्ष की उम्र में ही श्रीरामानुजम ने सभी वेदों और शास्त्रों का ज्ञान अर्जित कर लिया और 17 वर्ष की उम्र में उनका विवाह संपन्न हो गया। उन्होंने गृहस्थ आश्रम त्यागकर श्रीरंगम के यदिराज संन्यासी से संन्यास की दीक्षा ली। मैसूर के श्रीरंगम से चलकर रामानुज शालग्राम नामक स्थान पर रहने लगे। रामानुज ने उस क्षेत्र में 12 वर्ष तक वैष्णव धर्म का प्रचार किया। फिर उन्होंने वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए पूरे देश का भ्रमण किया। श्रीरामानुजाचार्य बड़े ही विद्वान और उदार थे। वे चरित्रबल और भक्ति में अद्वितीय थे। उन्हें योग सिद्धियां भी प्राप्त थीं।

वैष्णव आचार्यों में प्रमुख रामानुजाचार्य की शिष्य परंपरा में ही रामानंद हुए थे जिनके शिष्य कबीर और सूरदास थे। रामानुज ने वेदांत दर्शन पर आधारित अपना नया दर्शन विशिष्ट द्वैत वेदांत गढ़ा था। रामानुजाचार्य ने वेदांत के अलावा सातवीं-दसवीं शताब्दी के रहस्यवादी एवं भक्तिमार्गी अलवार संतों से भक्ति के दर्शन को तथा दक्षिण के पंचरात्र परंपरा को अपने विचार का आधार बनाया। श्री रामानुजाचार्य ने वेदांत दर्शन पर आधारित अपना नया दर्शन विशिष्ट द्वैत वेदांत गढ़ा था। उन्होंने वेदांत के अलावा सातवीं-दसवीं शताब्दी के रहस्यवादी एवं भक्तिमार्गी अलवार संतों से भक्ति के दर्शन को तथा दक्षिण के पंचरात्र परम्परा को अपने विचार का आधार बनाया।

विशिष्टाद्वैत दर्शन: रामनुजाचार्य के दर्शन में सत्ता या परमसत् के संबंध में तीन स्तर माने गए हैं- ब्रह्म अर्थात ईश्वर, चित् अर्थात आत्म, तथा अचित अर्थात प्रकृति। वस्तुतः ये चित् अर्थात् आत्म तत्व तथा अचित् अर्थात् प्रकृति तत्त्व ब्रह्म या ईश्वर से पृथक नहीं है बल्कि ये विशिष्ट रूप से ब्रह्म का ही स्वरूप है एवं ब्रह्म या ईश्वर पर ही आधारित हैं यही रामनुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत का सिद्धांत है, जैसे शरीर एवं आत्मा पृथक नहीं हैं तथा आत्म के उद्देश्य की पूर्ति के लिए शरीर कार्य करता है उसी प्रकार ब्रह्म या ईश्वर से पृथक चित् एवं अचित् तत्त्व का कोई अस्तित्व नहीं हैं वे ब्रह्म या ईश्वर का शरीर हैं तथा ब्रह्म या ईश्वर उनकी आत्मा सदृश्य हैं।

भक्ति से तात्पर्य: रामनुजाचार्य के अनुसार भक्ति का अर्थ पूजा-पाठ या कीर्तन-भजन नहीं बल्कि ध्यान करना या ईश्वर की प्रार्थना करना है। सामाजिक परिप्रेक्ष्य से रामानुजाचार्य ने भक्ति को जाति एवं वर्ग से पृथक तथा सभी के लिए संभव माना है। रामनुजाचार्य के ब्रह्मसूत्र पर भाष्य 'श्रीभाष्य' एवं 'वेदार्थ संग्रह' मूल ग्रंथ है। इसके अलावा वैकुंठ गद्यम, वेदांत सार, वेदार्थ संग्रह, श्रीरंग गद्यम, गीता भाष्य, नित्य ग्रंथम, वेदांत दीप, आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं। रामानुजाचार्य के अनुसार भक्ति का अर्थ पूजा-पाठ, कीर्तन-भजन नहीं बल्कि ध्यान करना, ईश्वर की प्रार्थना करना है। आज के समय में भी रामानुजम की उपलब्धियां और उपदेश उपयोगी हैं।

हिन्दू पुराणों के अनुसार श्री रामानुज 1137 ई. में ब्रह्मलीन हो गए अर्थात उनका जीवन काल लगभग 120 वर्ष (1017 ई. - 1137 ई.) का रहा था।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कलिका

54वाँ अंक, वार्षिक हिन्दी पत्रिका
वर्ष: 2023-24

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग, तेलंगाना, हैदराबाद

कार्यालय महानिदेशक (क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान) हैदराबाद
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना, हैदराबाद;
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) हैदराबाद;
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना, हैदराबाद;

अनुक्रमणिका

पत्रिका परिवार एवं संपादकीय 1
संदेश 2-8
आपके ख़त 9-11

1. जरुरी तो नहीं - रितु सिँह 12
2. धर्मानुसार जीवन कैसा हो ? - ए. एन. राधारमणी 13
3. सफर - जी. शेषाशयनी 14
4. ज़िंदगी के अनोखे पल - वाई. मीनाक्षी 15
5. हिन्दी मेरा अभिमान - एन. शेखर 16
6. लॉकडाउन में बच्चों की दुनिया - कल्पना वर्मा 17-18
7. जवान - भारत शर्मा 18
8. ई-कचरा : आधुनिकता का जहर - उदय कुमार मण्डल 19
9. जीवन पथ - पूजा कुमारी साव 20
10. आखिर क्यों - विनोद कुमार 21
11. भौतिक सुख के मानसिक विकार - महाराज गुप्ता 22
12. AI - वज़ीर सिँह 23

कार्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ 24-27

13. दुनियाँ में कैसे खुश रहा जाए? - ए. एन. राधारमणी 28
14. कोई तो ऐसा होना चाहिए - ज्योति दीक्षित 29
15. दोस्ती दुश्मनी - वी. सुधा 30
16. नारी महत्ता - श्री कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव 'पंकज' 31
17. महंगाई : एक वास्तविकता - राहुल कुमार 32
18. हिन्दी भाषा - एन. चन्द्रशेखर 33
19. आओ फिर से दिया जलाएँ - सोमबीर 34
20. फलेगी डालों में तलवार - रोहित 35
21. मैं और मेरी कविता - कल्पना वर्मा 36
22. समंदर सारे शराब होते - दीपक कुमार 37
23. वर्षा के संगीत - ओ. श्रीविद्या 38
24. त्रिवर्णा त्रिवर्णा !! - के. वी. किशोर कुमार 39
25. पेंसिल आर्ट - श्री धृति 40
26. चित्रकारी - के. एस. विजय 41
27. हाय रे बेटी तेरी यही कहानी - नवल किशोर शर्मा 42
28. शहर का दामाद - सी. सचिन 43-44
29. राजभाषा सम्मलेन 2022, सूरत - वज़ीर सिँह 45-50

स्वत्वाधिकार
पत्रिका परिवार के सभी विभागाध्यक्ष

प्रकाशन
"कलिका"
वार्षिक हिंदी पत्रिका

प्रकाशक
महालेखाकारों का कार्यालय परिसर,
सैफाबाद, हैदराबाद - 500004

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

1. सुश्री एस. सैलजा,
   महानिदेशक (क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान) हैदराबाद
2. श्री जे. एस. करपे,
   प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना
3. श्री अनिन्दया दासगुप्ता,
   प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) हैदराबाद
4. श्रीमती सुधा राजन,
   महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना

संरक्षक

1. श्रीमती प्रियंका एल. नायक,
   वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
2. श्री राकेश सी. सज्जन,
   निदेशक (प्रशासन एवं प्रत्यक्ष कर)
3. श्री डी. राजशेकर,
   उप महालेखाकार (प्रशासन)
4. श्रीमती जे. आर. रजिनी,
   वरिष्ठ लेखाधिकारी (प्रशासन)

प्रधान संपादक
श्री वज़ीर सिंह,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना

संपादन सहयोग:
श्री नीरज कुमार, हिंदी अधिकारी
श्रीमती ज्योति दीक्षित, हिंदी अधिकारी
श्रीमती कल्पना वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक
श्रीमती पूजा कुमारी साव, कनिष्ठ अनुवादक
कुमारी शालिनी, कनिष्ठ अनुवादक
कुमारी मैसर जहाँ, कनिष्ठ अनुवादक

मुद्रक: इमरान भाई, हैदराबाद

मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

विशेष: पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं के लिए स्वयं रचनाकार जिम्मेदार हैं, पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से पत्रिका परिवार का सहमत होना जरूरी नहीं है। किसी भी न्यायिक वाद के लिए न्यायिक क्षेत्र हैदराबाद, तेलंगाना होगा।

संपादकीय

आप सबको सादर नमन!

ये कहते हुए सुखद अनुभूति हो रही है कि हमारी राजभाषा पत्रिका "कलिका" के 54वें अंक के प्रकाशन के माध्यम से फिर से आप सब तक पहुँचने का अवसर मिल पाया है। राजभाषा पत्रिका के माध्यम से ये प्रयास भी किया जाता है कि संघ की राजभाषा नीति को बढ़ावा देने में सहायक इस पत्रिका से जुड़कर प्रत्येक पाठक को भी इस अभियान में जोड़ा जा सकें।

हर अंक की तरह इस अंक के माध्यम से विभागाध्यक्षो और कार्यालय अध्यक्षो के संदेशों और कार्यालय सदस्यों के विशिष्ट अनुभवों और संस्मरणों को शामिल करते हुए आप पाठकों तक पहुँचने का प्रयास किया गया है। हम सभी जानते हैं कि संघ की राजभाषा की अनुपालना केंद्रीय सरकार में कार्यरत हर अधिकारी और कर्मचारी का संवैधानिक दायित्व है और मुझे यह कहने में भी कोई झिझक नहीं है कि कई बार इस दायित्व को सिर्फ राजभाषा अनुभाग तक ही सीमित करने के प्रयास किए गए और संभवत: आगे भी ये प्रयास होते रहेंगे परन्तु इस संबंध में मैं आप सबको ये पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि योग्य नेतृत्व के कारण हम सभी उन सब बातों को दरकिनार करते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन जैसे पहले करते रहे थे वैसे ही आगे भी करते रहेंगे।

अगर मैं खुद की बात करूँ तो प्रेम, श्रृंगार, दार्शनिक, शासन-प्रशासन जैसे विषयों तथा सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक ताने-बाने से संबंधित मेरे भी बहुत से विचार हैं जो बहुत उबाल मारते रहते हैं लेकिन हर बार यही सोचकर नहीं लिखता कि फिर कभी फिर कभी.....! पिछले अंक की तरह फिर से यही कहूँगा कि कभी अवसर मिला तो अपने निजी विचारों को किसी निजी किताब के माध्यम से ही आप तक पहुँचाने की कोशिश करूँगा।

मैं समय-समय पर आवश्यक दिशानिर्देश देने वाले संरक्षक मंडल के साथ-साथ समर्पित सहयोग देने वाले संपादन मंडल के साथियों का भी आभारी हूँ जिससे पत्रिका के इस अंक का प्रकाशन सुलभ हो पाया। मुझे आप सबको यह बताते भी बहुत ख़ुशी हो रही है कि हमारी पत्रिका "कलिका" के पिछले अंक अर्थात 53वें अंक को नराकास - 1 हैदराबाद की तरफ से द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया था।

मुझे पूरी उम्मीद और भरोसा है कि आप पाठकों का प्रेम और स्नेह भी हमारी "कलिका" पत्रिका को अनवरत मिलता रहेगा और पत्रिका पर आपके अभिमत हमें हमेशा की तरह प्रेरणा देने के साथ ही मार्गदर्शन भी करते रहेंगे।

धन्यवाद सहित।

आपका

(वज़ीर सिँह)

सत्यमेव जयते

सुश्री सी. सैलजा
महानिदेशक (क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान), हैदराबाद

संदेश

राजभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है और हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति हमारा समर्पण दर्शाता है। भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को 'हिंदी' को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी है और उसके अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार करना एवं उसका विकास करना, संघ का कर्तव्य है। संघ सरकार के अधिकारी/कर्मचारी होने के नाते हिंदी में कार्य करना तथा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना हमारा भी संवैधानिक कर्तव्य है। आज देश स्वतन्त्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है। इस स्वतन्त्रता के पीछे भी हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज हिंदी चहुंमुखी विकास की द्योतक है।

"कलिका" के इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए सभी रचनाकारों एवं इसके विविध कार्यों से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का मैं विशेष आभार प्रकट करती हूँ और पत्रिका की प्रगति की कामना करती हूँ। सफल प्रकाशन के लिए मैं समस्त रचनाकारों तथा संपादक मण्डल को अशेष शुभकामनाएं देती हूँ तथा आशा करती हूँ कि हमारी यह पत्रिका प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर रहे।

सी. सैलजा

(सी. सैलजा)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्री जे. एस. करपे,
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) तेलंगाना, हैदराबाद

संदेश

हमारी राजभाषा हिंदी की महत्ता विश्व में दिन प्रतिदिन बढ़ रही है जो कि भारतवासी होने के कारण हम सबके लिए सम्मान का विषय है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के इसी क्रम में हमारी हिंदी गृह पत्रिका "कलिका" के 54वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है।

हमारी हिंदी पत्रिका का प्रकाशन इस बात का प्रमाण है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति कार्यालय सदस्यों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है और निश्चित तौर पर सभी कार्मिकों को समेकित रूप में एक करते हुए उन्हें राजभाषा हिंदी के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन भी प्रदान करती है।

"कलिका" के 54वें अंक के प्रकाशन हेतु पत्रिका परिवार के सदस्यों, सम्पादक और सम्पादन मंडल के सदस्यों तथा सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ। मेरी शुभकामनाएँ है कि "कलिका" पत्रिका का प्रकाशन इसी तरह से हमें राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पित करने के रूप में अहम् कड़ी साबित होगा।

(जे. एस. करपे)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्री अनिंद्य दासगुप्ता,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) हैदराबाद

संदेश

हमारी हिंदी गृह पत्रिका "कलिका" के 54वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के मुख्यालयों एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संयुक्त हिंदी पत्रिका "कलिका" के माध्यम से सभी सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लेख, कविता, अनुभव और संस्मरण इत्यादि के माध्यम से यह प्रयास किया जाता है कि कार्मिकों के कार्यालयी क्षमता के साथ उनके व्यवहारात्मक कौशल को भी निखारा जाए और मेरा मानना है कि हमारी पत्रिका इस दिशा में बढ़ता हुआ एक सकारात्मक कदम है।

मैं "कलिका" पत्रिका से जुड़े प्रत्येक सदस्य जैसे सम्पादक महोदय तथा सम्पादन मंडल से जुड़े सदस्यों और रचनाकारों के रूप में पत्रिका से जुड़े प्रत्येक कार्मिक या उनके पारिवारिक सदस्यों को बधाई देता हूँ और अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ अग्रेषित करते हुए यह आशा करता हूँ कि आप सभी भविष्य में भी हमारी पत्रिका के उज्जवल भविष्य को संवारने में अपना शत - प्रतिशत योगदान देते रहेंगे।

आपके सुझाव हमें अपेक्षित सुधारों की तरफ अग्रसर करेंगे तथा भविष्य में आगामी अंकों के प्रकाशन के लिए अभिप्रेरित भी करेंगे।

अनिंद्य दासगुप्ता

(अनिंद्य दासगुप्ता)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्रीमती सुधा राजन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना, हैदराबाद

संदेश

इस कार्यालय की गृह पत्रिका "कलिका" के 54वाँ अंक को प्रकाशित करना हमारे लिए गर्व एवं प्रसन्नता की बात है। संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने में हिन्दी भाषा की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। देश के लगभग सभी क्षेत्रों में संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का लगातार विकास हो रहा है तथा लोगों का स्नेह भी मिल रहा है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन का लक्ष्य केवल राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना ही नहीं, बल्कि हमारे कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभाओं को उजागर करना भी है।

"कलिका" के इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए मैं समस्त रचनाकारों तथा संपादक मण्डल को अशेष शुभकामनाएं देती हूँ तथा आशा करती हूँ कि हमारी यह पत्रिका प्रगति पथ पर हमेशा अग्रसर रहे।

सुधा राजन

(सुधा राजन)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्रीमती प्रियांका एल. नायक,
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) तेलंगाना

संदेश

हम सभी जानते हैं कि विभागीय पत्रिकाएँ हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ बहुउद्देशीय लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो रही हैं और उन्ही लक्ष्यों की तरफ़ अग्रसर होते हुए हमारी हिंदी गृह पत्रिका "कलिका" के 54वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है जो कि हम सबके लिए ख़ुशी की बात है।

विभागीय हिंदी पत्रिकाएँ विभिन्न विषयों संबंधित रचनाओं द्वारा पाठकों के व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि करने के साथ ही पाठकों का मनोरंजन भी करती हैं। सरकारी कार्य में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ "कलिका" पत्रिका का 54वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

"कलिका" के 54वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए सम्पादक, सम्पादन मंडल तथा सभी रचनाकारों को बहुत-बहुत बधाई।

प्रियांका नायक

(प्रियांका एल. नायक)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्री डी. राजशेकर
उप महालेखाकार (प्रशासन),
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तेलंगाना

संदेश

कार्यालय की गृह पत्रिका "कलिका" का 54वाँ अंक आप सभी तक पहुँचाते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस पत्रिका के प्रत्येक अंक का प्रकाशन हमारे कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की राजभाषा हिन्दी के प्रति उनकी निष्ठा एवं स्नेह को दर्शाता है। यह पत्रिका न केवल राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित कर रही है अपितु हमारे कार्यालय के कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों की सृजनात्मक प्रतिभाओं को अभिव्यक्त करने के लिए एक विशिष्ट मंच प्रदान कर रही है।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों तथा सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई देते हुए यह आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हिन्दी की विकास यात्रा में अपना विशिष्ट योगदान करती रहे।

(डी. राजशेकर)

★ ★ ★

सत्यमेव जयते

श्रीमती जे. आर. रजिनी,
वरिष्ठ लेखाधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

संदेश

हिंदी पत्रिका "कलिका" के 54वें अंक के प्रकाशन पर ख़ुशी व्यक्त करते हुए यह कहना चाहती हूँ कि हिंदी पत्रिका के माध्यम से कार्यालय सदस्यों ने एक संगठित टीम के रूप में कार्य किया है जो कि उत्साहवर्धक है।

मैं "कलिका" के 54वें अंक के प्रकाशन हेतु पत्रिका सम्पादक श्री वजीर सिंह और सम्पादन मंडल के अन्य सदस्यों के साथ ही सभी रचनाकारों को भी बधाई देती हूँ। मेरी शुभकामनाएँ है "कलिका" पत्रिका निरंतर सफलता के पड़ाव चढ़ती रहे।

रजिनी.

(जे. आर. रजिनी)

★ ★ ★

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी - 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI - 781 029

पत्र संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2022-23/
दिनांक: 04.07.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हक.),
तेलंगाना, हैदराबाद - 500004

संदर्भ:- म.ले.का.अ.ले. एवं ह.(ले.प.)/पत्र-41/कलिका/2021-22/326339 दिनांक 18.04.2022

विषय: हिंदी पत्रिका "कलिका" के 53वें अंक की समीक्षा

महोदय,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "कलिका" के 53वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर लेख एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री प्रकाश जीवन गुप्ता, लेखापरीक्षक की कविता "खुद की खोज", श्री सतीश सिंह, हिंदी अधिकारी की कविता "आओ" लिए तथा ... कुमारी, सहायक लेखा अधिकारी का लेख "बरसाती का रहस्य" प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(योगेश कुमार मिश्र)
हिंदी अधिकारी

589020

Tele (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301656/2305215 FAX :0361-2303142/2305901
E-mail: agaeassam@cag.gov.in

भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी - 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI - 781 029

पत्र संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2022-23/
दिनांक: 04.07.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हक.),
तेलंगाना, हैदराबाद - 500004

संदर्भ:- म.ले.का.अ.ले. एवं ह.(ले.प.)/पत्र-41/कलिका/2021-22/326339 दिनांक 18.04.2022

विषय: हिंदी पत्रिका "कलिका" के 53वें अंक की समीक्षा

महोदय,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "कलिका" के 53वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर लेख एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्री प्रकाश जीवन गुप्ता, लेखापरीक्षक की कविता "खुद की खोज", श्री सतीश सिंह, हिंदी अधिकारी की कविता "आओ" लिए तथा ... कुमारी, सहायक लेखा अधिकारी का लेख "बरसाती का रहस्य" प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(योगेश कुमार मिश्र)
हिंदी अधिकारी

589020

Tele (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301656/2305215 FAX :0361-2303142/2305901
E-mail: agaeassam@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट सं. 5, सेक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.
संख्या: हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2022-23/21
दिनांक: 4.05.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हक),
तेलंगाना, हैदराबाद-500 004

विषय: "कलिका" 53वें अंक का प्रेषण संबंधित।

महोदय,

आपके पत्र संख्या म.ले.का.अ.ले. एवं ह. (ले.प.)/पत्र-41/कलिका/2021-22/326296 दिनांक 18.04.2022 के द्वारा कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'कलिका' के 53वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक हैं। 'विज्ञान और धर्म', 'शिक्षा का महत्व', 'हिंदी है हम और हिंदी भाषा', 'जीने की कला', 'कोरोना प्रभाव' एवं 'उरी हमला और आतंकवाद' आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रेरणादायक हैं। रचनाओं के चयन में संपादक मंडल की कुशलता एवं साहित्यिक समझ सराहनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

दूरभाष: 0172-2661704, 2618277 फैक्स: 0172-2613488, 2607732 ई-मेल: [illegible]
Calliet_Hindicell_DOJ_Mangal.doc

SPEED POST

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),असम,बेलतला,गुवाहाटी-781029
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), ASSAM, BELTOLA, GUWAHATI-29

सं. हि.क.(सं.प.)/प.प./पत्रि-1/2021-22/69 दिनांक: 24.05.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हक.),
तेलंगाना, हैदराबाद - 500 004

विषय:- आपके द्वारा प्रेषित संयुक्त हिंदी पत्रिका 'कलिका' के 53वें अंक की पावती।

महोदया/महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित संयुक्त हिंदी पत्रिका 'कलिका' का 53वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के नैतिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्र. महालेखाकार (लेखा व हक.) पंजाब व यू.टी. चण्डीगढ़
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A & E), PUNJAB & U.T. CHANDIGARH-160017
फैक्स 0172-2703110 दू.भा - 2702272,2702072
क्रमांक-हिंदी कक्ष/[illegible]-10/2022-23/ 57
दिनांक- 18/05/2023

सेवा में
हिंदी अधिकारी,
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हकदारी),
तेलंगाना, हैदराबाद-500004 ।

विषय - विभागीय पत्रिका 'कलिका' के 53वें अंक की प्राप्ति।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'कलिका' का नवीन अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं [illegible] हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

श्री [illegible] सिंह जी की 'जीने की कला', श्री विवेक कुमार [illegible] की [illegible], श्री [illegible] की [illegible], श्री [illegible] की [illegible] रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय परिवार को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ ।

भवदीय

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर
[illegible]

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.),
तेलंगाना, हैदराबाद-500004

विषय- हिंदी पत्रिका "कलिका" के 53 वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "कलिका" का 53 वां अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। [illegible] नई दिशा मिलती है।

पत्रिका के कुशल संपादन व प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

(अरुण कुमार शर्मा)
Welfare Officer
राजभाषा अनुभाग

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग,
कोलकाता – 700 001

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDING,
KOLKATA 700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax: (033) 2213-[illegible]
e-mail: [illegible]

संख्या: हिंदी कक्ष/[illegible]
दिनांक: 25.04.2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार का कार्यालय (लेखा एवं हक.), तेलंगाना
हैदराबाद – 500 004

विषय : कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका "कलिका" के 53वें अंक की पावती।

महोदय,

पत्र क्रमांक [illegible]/2021-22/[illegible] दिनांक 18.04.2022 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित [illegible] हिन्दी ई-पत्रिका "कलिका" के 53वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक हैं। [illegible] के आंकड़े भरने की विधि बताई गई है जो कि अत्यंत ही उपयोगी है। आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा-II
पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General, Audit-II
West Bengal

संख्या – हिन्दी कक्ष/पत्रिका पावती/13
दिनांक- [illegible]/2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार का कार्यालय, (ले. व ह.)
तेलंगाना, हैदराबाद-500004

विषय: हिन्दी पत्रिका 'कलिका' के 53वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'कलिका' के 53वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। पत्रिका में प्रकाशित कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगी वो हैं- विज्ञान और धर्म, 'उनके लिए', खुद की खोज, कितने दूर-कितने पास आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर उन्नति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्टलेक,कोलकाता-700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata – 700 064
Phone: (033) 2337-4916, FAX: (033) 2337-7856, e-mail: [illegible]

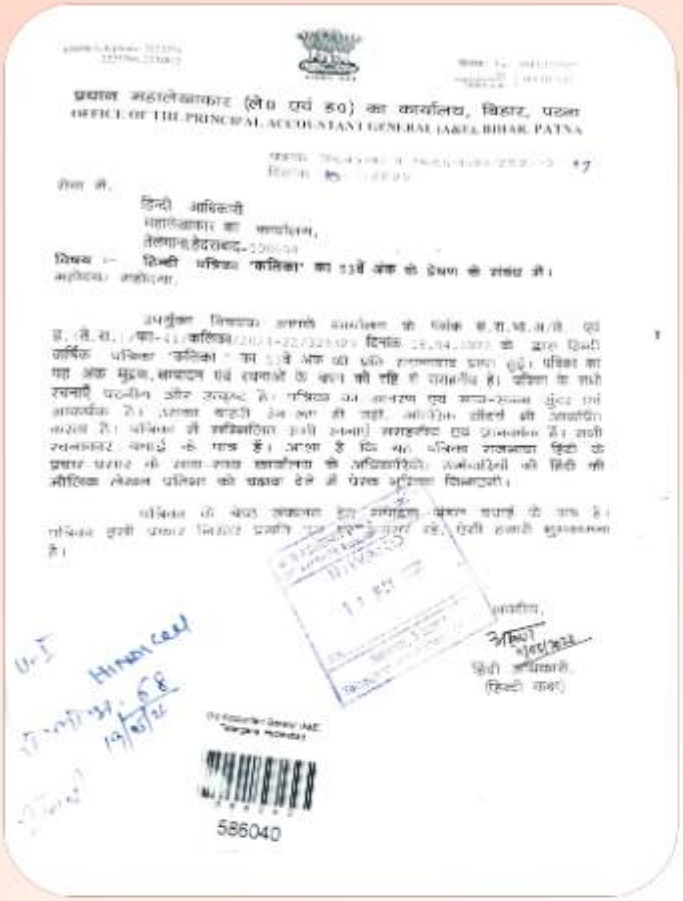

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी
महालेखाकार का कार्यालय,
तेलंगाना,हैदराबाद-

विषय :- हिन्दी पत्रिका "कलिका" का 53वें अंक की प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक [illegible] /कलिका/2021-22/325320 दिनांक [illegible] के द्वारा हिन्दी वार्षिक पत्रिका "कलिका" का 53वें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक मुद्रण, संपादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से सराहनीय है। पत्रिका के सभी रचनाएँ पठनीय और उत्कृष्ट हैं। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। [illegible] सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के [illegible] संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति [illegible] रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

586040

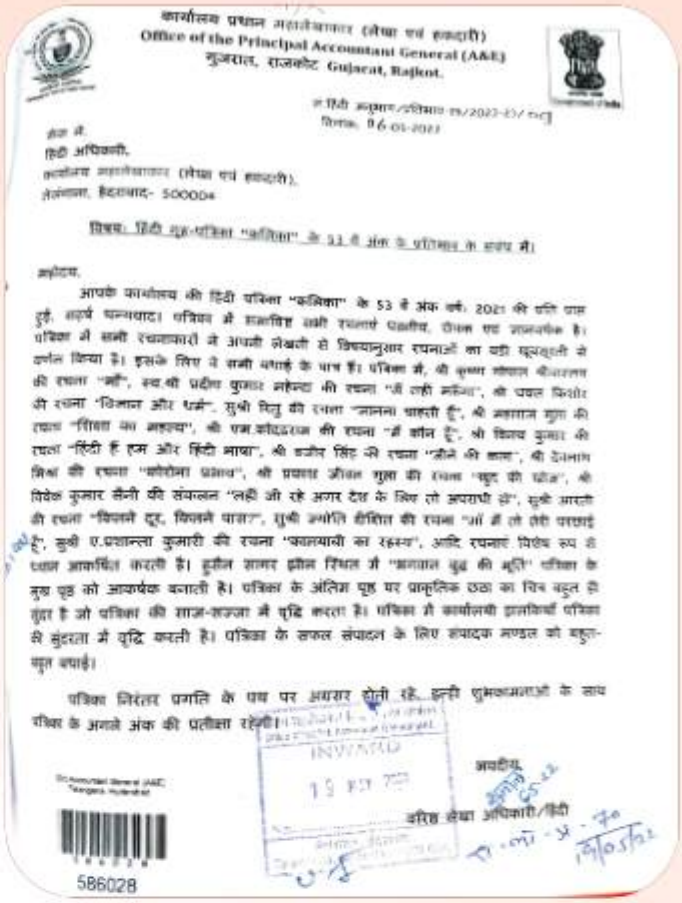

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

क्र.हिंदी अनुभाग/पत्रिका-19/2022-23/ [illegible]
दिनांक: 06-05-2022

सेवा में,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
तेलंगाना, हैदराबाद- 500004

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "कलिका" के 53 वें अंक के प्रतिभाव के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "कलिका" के 53 वें अंक वर्ष- 2021 की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, श्री कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव की रचना "माँ", स्व.श्री प्रदीप कुमार महेन्द्रा की रचना "मैं नहीं मानूँगा", श्री पवन किशोर की रचना "विज्ञान और धर्म", सुश्री मिनु की रचना "जानना चाहती हूँ", श्री [illegible] की रचना "शिक्षा का महत्त्व", श्री एम.कोंडाराव की रचना "मैं कौन हूँ", श्री विनय कुमार की रचना "हिंदी हैं हम और हिंदी भाषा", श्री [illegible] सिंह की रचना "जीने की कला", श्री [illegible] मिश्रा की रचना "कोरोना प्रभाव", श्री [illegible] गुप्ता की रचना "खुद की खोज", श्री विवेक कुमार सैनी की संकलन "नहीं जी रहे अगर देश के लिए तो अपराधी हैं", सुश्री आरती की रचना "कितने दूर, कितने पास", सुश्री ज्योति दीक्षित की रचना "माँ मैं तो तेरी परछाई हूँ", सुश्री ए.प्रशान्ता कुमारी की रचना "कलमकारी का रहस्य", आदि रचनाएं विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती हैं। हुसैन सागर झील स्थित मे "भगवान बुद्ध की मूर्ति" पत्रिका के मुख पृष्ठ को आकर्षक बनाती है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर प्राकृतिक छटा का चित्र बहुत ही सुंदर है जो पत्रिका की साज-सज्जा में वृद्धि करता है। पत्रिका में कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

586028

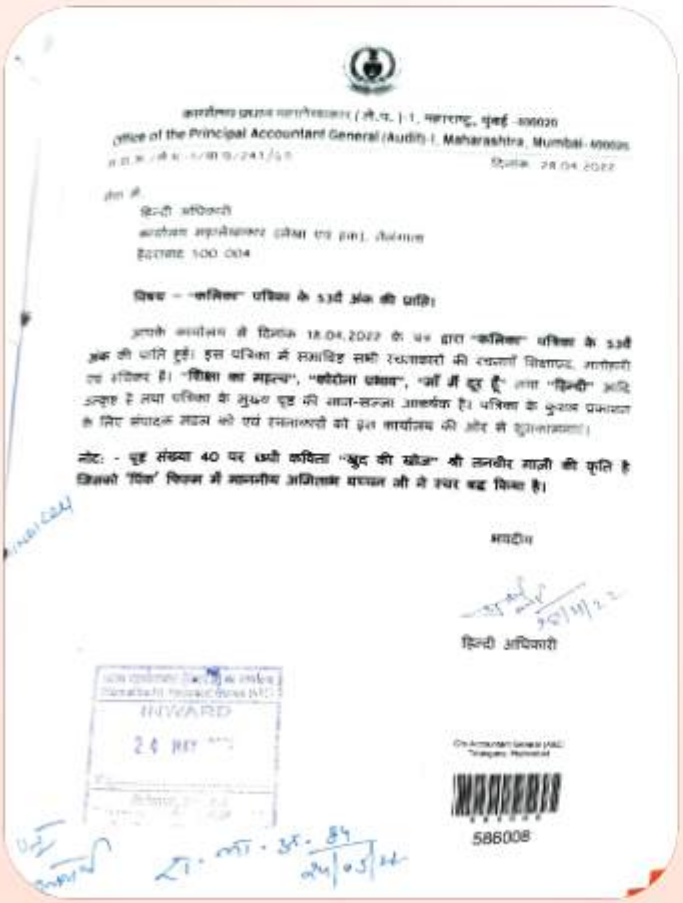

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)-1, महाराष्ट्र, मुंबई -400020
Office of the Principal Accountant General (Audit)-I, Maharashtra, Mumbai-400020

प्र.म.ले./ [illegible] /241/ [illegible]
दिनांक 28.04.2022

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक़), तेलंगाना
हैदराबाद 500 004

विषय – "कलिका" पत्रिका के 53वें अंक की प्राप्ति।

आपके कार्यालय से दिनांक 18.04.2022 के पत्र द्वारा "कलिका" पत्रिका के 53वें अंक की प्राप्ति हुई। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाकारों की रचनाएँ विचारपरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। "शिक्षा का महत्त्व", "कोरोना प्रभाव", "माँ मैं दूर हूँ" तथा "हिन्दी" आदि उत्कृष्ट हैं तथा पत्रिका के मुखपृष्ठ की साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका के कुशल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को एवं रचनाकारों को इस कार्यालय की ओर से शुभकामनाएं।

नोट: - पृष्ठ संख्या 40 पर छपी कविता "खुद की खोज" श्री तनवीर गाज़ी की कृति है जिसको 'पिंक' फिल्म में माननीय अमिताभ बच्चन जी ने स्वर बद्ध किया है।

भवदीय

हिन्दी अधिकारी

586008

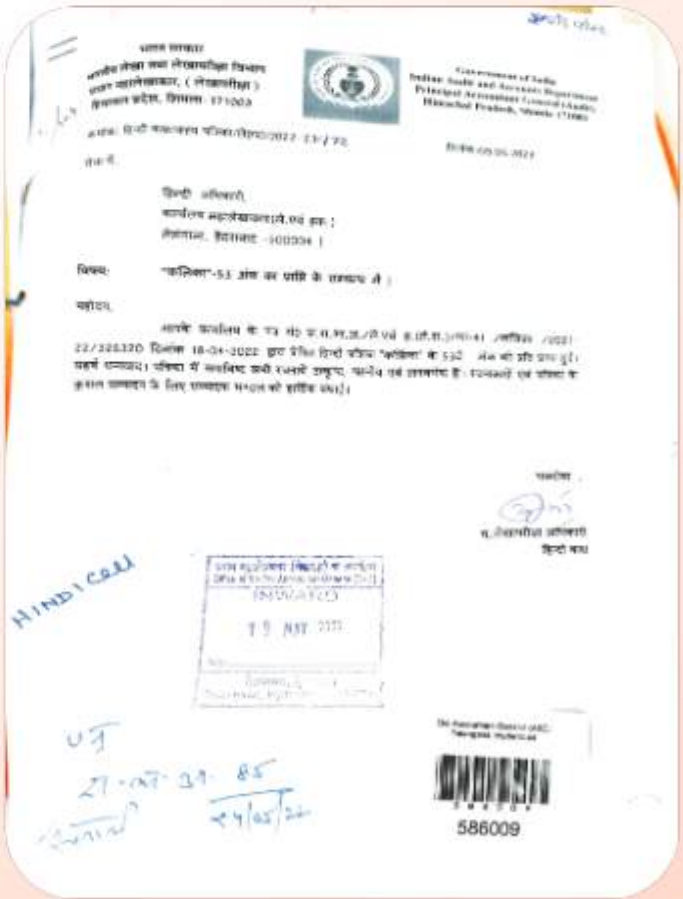

भारत सरकार
भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला- 171003

Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla-171003

क्रमांक: हिंदी पत्राचार/पत्रिका/विविध/2022-23/ [illegible]
दिनांक 05.05.2022

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार(ले.एवं हक.)
तेलंगाना, हैदराबाद -500004।

विषय: "कलिका"-53 अंक का प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं० [illegible] /कलिका /2021-22/325320 दिनांक 18-04-2022 द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "कलिका" के 53वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल सम्पादन के लिए सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई।

भवदीय

व.लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

586009

रितु सिँह
पी.ए.ओ. अनुभाग

ये जरुरी तो नहीं

जमीन आसमान को चाहे,
और वो उसे मिल ही जाए,
ये जरुरी तो नहीं .....!

दुनियाँ के गतिमान चक्र में, होता है रोज बहुत कुछ,
पर जो हो रहा है वो सब सही ही हो,
ये जरुरी तो नहीं .....!

अनजानों की भीड़ भरे शहर में,
कोई अपना भी कभी मिल ही जाए,
ये जरुरी तो नहीं .....!

ख्वाब देखने से शुरू करता है इंसान जीवन अपना,
मौत के आगोश में जाने से पहले वो सब पूरे हो ही जाएँ,
ये जरुरी तो नहीं .....!

गर जरूरतों के आगे कमाई कम हो तो,
खुद्दारी को ही गिरवी रख के जिया जाए,
ये जरुरी तो नहीं .....!

कहते हैं इंसान अपना पहला प्यार कभी नहीं भूलता,
पर पहली बार में ही सबको अच्छा इंसान मिल ही जाए,
ये जरुरी तो नहीं .....!

ए. एन. राधारमणी,
सहायक पर्यवेक्षक,
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

धर्मानुसार जीवन कैसा हो ?

धर्म के अनुसार जीने के लिए हमें सत्य मार्ग पर चलना चाहिए। निडर होकर सत्य कहना चाहिए। परिणाम चाहे कैसे भी हों, डरकर असत्य नहीं कहना चाहिए। हमें सत्य कहने का अभ्यास करना चाहिए। हमेशा सत्य बोलने की आदत से हमें अपनी जुबान को अभ्यस्त करना चाहिए। रामायण, महाभारत, भागवत गीता, बाइबल, कुरान, गुरु ग्रंथ साहिब और अन्य सभी ग्रन्थों में नियमों के पालन और अभ्यास करने से हम संतों के गुणों को प्राप्त कर सकते हैं। आध्यात्मिक ग्रन्थों को पढ़ने और सुनने से हमारे लिए धर्म के मार्ग पर चलना सुलभ हो जाता है। आध्यात्मिक उपन्यासों को पढ़ने से हमारे अन्तर्मन में पवित्र भाव जागृत होते हैं।

धर्म और समाज कल्याण के लिए श्री राम ने अपने पिता के आदेशों का पालन किया था और अर्जुन ने भी इसी पथ पर चलते हुए श्री कृष्ण के आदेशों का पालन किया था और धर्म की स्थापना की थी। इसी तरह हम सबको भी धर्म और सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए। जीवन में कभी असत्य का सहारा नहीं लेना चाहिए क्योंकि असत्य हमें धर्म मार्ग से भटका देता है। इसीलिए हमें सत्य एवं धर्म के मार्ग का अनुसरण कर बेहतर समाज का निर्माण करने का प्रयत्न करना चाहिए। अकेले व्यक्ति के प्रयत्न से भी समाज में परिवर्तन संभव है। इसी आकांक्षा के साथ हमे सत्य एवं धर्म मार्ग पर चलकर समाज कल्याण एवं सभी के बेहतर भविष्य के लिए निरंतर प्रयत्नरत रहना चाहिए।

जी. शेषाशयनी,
स.ले.प.अ.,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

सफर

इस धरती पर हम और आप हैं,
कई उम्मीदों को निभाने को।
शत वर्षों के अपने सफर को,
सफल-सुफल बनाने को।
धर्म पथ पर चलते-चलते,
राह में सबके साथ मिलते-जुलते।
आगे कदम बढ़ाने को,
जीवन को आनंदमय बनाने को।
न कभी गिरना, नहीं है बड़ी बात,
गिरकर उठना ही है बड़ी बात।
बीता हुआ पल हमारा नहीं,
कल क्या हो, ये अंदाज़ा नहीं।
लेकिन अभी तो ये पल हमारा है,
बस अब जीवन का फर्ज़ निभाना है।

वाई. मीनाक्षी,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (सेवानिवृत),
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

ज़िंदगी के अनोखे पल

ज़िंदगी का मकसद सिर्फ सुख और संतुष्ट रहना ही नहीं,
परंतु दूसरों को संतुष्ट करने में उसकी उपयोगिता है,
सुख पाना मुश्किल है परंतु असंभव नहीं है,

अपना समय सीमित है, इसलिए इस ज़िंदगी को नहीं गंवाना चाहिए,
माना की ज़िंदगी की राहें आसान नहीं है,
मगर मुस्कुराते हुए चलने में कोई नुकसान नहीं है,

माना की आज की दुनियाँ में रिश्ता निभाना आसान नहीं,
मगर कर्तव्य निभाने और धर्म पालन करने में कोई नुकसान नहीं,

ज़िंदगी का अधिकतर समय इस कार्यालय से जुड़े हुए थे
और मैं इस जिंदगी को सफल मानती हूँ कि
हर पल मुझे उत्साहित और उत्तेजित बनती रहीं,

ज़िंदगी ने हमें बहुत कुछ सिखाया कि हम आज इस स्थिति तक पहुँच सके,
इसलिए मैं इस ज़िंदगी और कार्यालय को प्रणाम समर्पित करती हूँ।

एन. शेखर,
लेखाकार,
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

हिन्दी मेरा अभिमान

हिन्दी का उत्थान करना, हिन्दी का तुम नाम करना,

यह जननी है हर भाषा की, हिन्दी पर तुम अभिमान करना,

जिस भाषा ने रिश्ते समझाएँ, जो हर भाषा को अपनाए,

हर बोली को अपने साथ लिए, नम्रता का लिबास लिए

जिस भाषा में पंत, निराला, प्रेमचंद की लेखनी का ज्ञान है,

जिस भाषा में तुलसी, सूर, मीरा, जायसी की तान है,

जिस हिन्दी से हिंदुस्तान बना, जिस हिन्दी ने इतिहास रचा

जिस हिन्दी को बचाने में यहाँ दशकों तक बवाल मचा,

यही हमारी वर्तनी है, यही हमारा व्याकरण,

यही हमारी संस्कृति है यही हमारा आचरण,

हिन्दी से पहचान है, हिन्दी मेरी शान है,

हिन्दी से है प्रेम मुझे, हिन्दी पर है अभिमान।

कल्पना वर्मा,
वरिष्ठ अनुवादक,
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

लॉकडाउन में बच्चों की दुनिया

कुछ समय पहले कोरोना वायरस विश्व की सबसे बड़ी समस्या थी और आज भी विश्व के कई हिस्सों में इसके कुछ मामले सामने आते रहते हैं। इस वायरस ने हमारी सामान्य ज़िंदगी को पूरी तरह बदल दिया। किस ने सोचा था कि एक अणु से भी छोटा कण इतना शक्तिशाली होगा कि उससे बचने के लिए मनुष्य को अपने नाक-मुंह को हमेशा ढँक कर और हाथों को रगड़-रगड़ कर घिसना पड़ेगा। हालांकि भारत में इसका टीकाकरण भी पूरा हो चुका है, पर सावधानी तो हमेशा ही बरतनी चाहिए। इस वायरस से लड़ने के लिए "सावधानी हटी, दुर्घटना घटी" मुहावरा उपयुक्त है। इसी समस्या के निवारण के लिए सरकार ने समय-समय पर लॉकडाउन घोषित किए थे जिससे इसके संक्रमण को कुछ कम किया जा सके एवं वायरस की शृंखला को तोड़ा जा सके। लॉकडाउन के दौरान सरकार द्वारा हिदायत दी गई थी कि सभी लोग अपने घरों में ही रहें एवं अत्यधिक काम होने पर ही घर से निकलें। साथ ही, स्कूल, कॉलेज, पार्क, सिनेमा हाल और जिमख़ाना भी बंद कर दिये गए थे। अब आप तो जानते ही होंगे कि यदि बच्चों के स्कूल और पार्क दोनों बंद हो जाये तो घर में क्या-क्या होता है? और यहीं से शुरू होती है हमारी दास्तान-ए- लॉकडाउन।

मैं एक सरकारी कार्यालय में कार्यरत हूँ। अचानक हुए लॉकडाउन से हमें यह आदेश दिया गया था कि घर से ही कार्यालय का काम किया जाए। मेरी बेटी उस समय के.जी. क्लास की वार्षिक परीक्षा दे रही थी जिस समय पहला लॉकडाउन लगाया गया था। उसकी परीक्षा को बीच में ही रद्द कर दिया गया और सभी बच्चों को घर से ऑनलाइन क्लास के माध्यम से पढ़ने को कहा गया। ज़िंदगी का असली संघर्ष तो तब से शुरू हुआ।

परीक्षा बीच में खत्म होने के कारण सभी बच्चों के जीवन में अचानक से तेज़ रोशनी और ऊर्जा का प्रवाह हुआ। सभी बच्चों ने इस प्रकार की स्वतन्त्रता का अनुभव किया जैसे पहले कभी नहीं किया। अचानक से सभी बच्चों के चेहरे चमकने लगे परंतु वे भूल गए कि जिस शब्द (लॉकडाउन) को उन्होनें अपने जीवन में पहले कभी नहीं सुना था उसका असली अर्थ क्या होता है। ऐसे आजाद परिंदे बनकर कुछ 10-15 दिन उन्होनें खुशी-खुशी बिताएँ, किताब को हाथ तक नहीं लगाया, पूरा दिन अपने टेलीविज़न और मोबाइल पर अपने पसंदीदा कार्यक्रम देखे, गेम खेले और रज-रजकर माता-पिता से फरमाइश कर एक से एक पकवान भी खाये। अधिकतर बच्चों के माता-पिता घर से ही कार्यालय का काम कर रहे थे। यहाँ बच्चे मदमस्त थे, तो वहीं माता-पिता घर पर कोई सहायिका ना होने के कारण परेशान होते जा रहे थे। पहले तो बच्चों को खुश करने के लिए यू-ट्यूब से सीखकर आए दिन रोज नए पकवान बनाए जाते और फिर उसे हैश-टैग के साथ सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया जाता। फिर धीरे-धीरे पकवान के साथ गंदे होने वाले बर्तनों और फर्श पर बच्चों द्वारा गिराए हुए टुकड़ों को साफ करते पकवानों की संख्या कम होती चली गई। इसी बीच बहुत से माता-पिता को अपने बच्चों के असली हुनर का पता चला जैसा उनका बच्चा एक घंटे में कितने बर्गर खा सकता है, एक बोतल कोल्डड्रिंक कितने सेकंड में पी सकता है, कितने दिन पढ़ाई किए बिना रह सकता है, कितने घंटे लगातार मोबाइल देख सकता है, घर से काम करते वक़्त मोबाइल या लैपटाप के सामने कितनी ज़ोर से चिल्ला सकता है, कितना अच्छा वीडियो-गेम खेल सकता है और भी ना जाने क्या क्या।

इन सभी घटनाओं के बीच मानव संवेदनाओं की अन्य महत्तवपूर्ण घटनाएँ भी समकक्ष घट रही थीं। इस लॉकडाउन के कारण जो भी माता-पिता कामकाजी थे, उन्हें अपने बच्चों के साथ गुणवत्ता समय बिताने को मिला। यह बात तो सत्य है कि कार्यालय में काम करने के कारण, बहुत से माता-पिता अपने बच्चों पर उतना ध्यान नहीं दे पाते, जितना उन्होनें लॉकडाउन के समय अपने बच्चों को प्यार दिया। विश्व ने इस महामारी के समय भी वात्सल्य के विभिन्न रूप देखें। बच्चों के साथ-साथ माता-पिता ने भी अपने बचपन के हुनर को रंग दिया। बच्चों के साथ गीत गाने से लेकर उनकी उम्र के चित्रों में रंग भरने तक बहुत सी चीजों का माता-पिता ने भी आनंद लिया। साथ ही, माता-पिता का यह भी प्रयास था कि महामारी के भयवाह समाचारों से उत्पन्न हो रहे तनाव से बच्चों को यथासंभव दूर रखा जाए। यह निर्विवाद सत्य है कि समाज में बढ़ रहे किसी भी प्रकार के तनाव का सबसे बुरा प्रभाव बच्चों के मानस पटल पर पड़ता है। बहुत से लोग अपने बच्चों के साथ कोरोना की बीमारी से ग्रस्त भी हुए, परंतु माता-पिता ने बीमार रहते हुए भी बच्चों की निरंतर हिम्मत बढ़ायी। उस समय की कुछ वैज्ञानिक रिपोर्ट के अनुसार बच्चों पर कोरोना वायरस का खतरा कम था जिसके कारण माता-पिता आश्वस्त तो थे, परंतु उन्होनें बच्चों के लिए कोरोना वायरस के खिलाफ़ सावधानी बरतने में कोई कमी नहीं की थी। इसलिए यह कहना भी अतिशयोक्ति ना होगी कि कोरोना वायरस की महामारी के दौरान सभी माता-पिता ने बच्चों की असामान्य ज़िंदगी को सामान्य बनाने का पूर्ण प्रयास किया। किसे पता था कि इस असामान्य ज़िंदगी की सामान्यता दो वर्षों तक रहेगी।

जवान

भारत शर्मा,
लेखाकार,
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

जवान

एक लाल रंग लहू का है,
एक लाल रंग की माटी है,
एक गौरव भारत माता का है,
एक ममता मेरी माँ की है,
एक सरहद पर खड़ा जवान है,
जो ताने अपनी छाती है,
एक जीवन भय-भर-कोप भरा,
एक मौत शहीदों वाली है।

उदय कुमार मण्डल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

ई-कचरा : आधुनिकता का जहर

ई-कचरा अर्थात इलेक्ट्रोनिक अपशिष्ट से तात्पर्य उन सभी इलेक्ट्रोनिक एवं इलेक्ट्रिकल उपकरण एवं उनके घटक, उपभोग वस्तुएँ पुर्जे आदि से है जो अब प्रयोग में नहीं है। जैसे - मोबाइल, कंप्यूटर, टेलीविजन वातानुकूलित उपकरण, फ्रिज, वॉशिंग मशीन, कैलकुलेटर, बैटरी, CFL एवं LED बल्ब, इलेक्ट्रोनिक खिलौने आदि। ई-कचरा में 100 से भी अधिक विषैले तत्व पाए जाते हैं जैसे - पारा, बैरेलियम, कैडियम, क्रेमियम, सीसा, निकेल, आर्सेनिक आदि। जो पर्यावरण के साथ-साथ जीव-जन्तु के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसके असुरक्षित निस्तारण से तरह-तरह की जानलेवा बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं, साथ ही मिट्टी और भूजल को दूषित करके खाद्य आपूर्ति प्रणालियों और जल स्त्रोतों को भी ये प्रभावित करता है।

आने वाले समय में भारत जैसे विकासशील देशों में ई-कचरा की मात्रा और बढ़ती जाएगी। वर्तमान में ही भारत में प्रति वर्ष लगभग 22 लाख टन से ज्यादा ई-कचरा उत्पन्न होता है, जिसमें से ज्यादातर कचरों का निपटान असंगठित क्षेत्रों द्वारा किया जाता है। इस क्षेत्र में काम करने वाले प्रायः गरीब मजदूर या कम उम्र के युवा होते हैं। इससे इनके स्वास्थ्य पर तो बुरा प्रभाव पड़ता ही है, साथ ही पर्यावरण का नुकसान भी होता है। इसलिए इस विषय पर अधिक गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। उपभोक्ताओं एवं उत्पादनकर्ताओं को अपने पुराने इलेक्ट्रोनिक सामानों की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। उन्हें सुनिश्चित करना चाहिए कि उनका ई-कचरा अधिकृत संग्रह केंद्रों या केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा केंद्रीय पर्यावरण एवं मंत्रालय द्वारा प्रमाणित प्रचक्रण केन्द्रों पर जमा किया जाये।

ई-कचरा हमारे आधुनिक जीवन का एक अपरिहार्य हिस्सा है, फिर भी इस समस्या को सूझबूझ से रोका या कम जा सकता है जैसे कि इलेक्ट्रोनिक सामानों को कम या पुनः उपयोग करके। हमें उन वस्तुओं को बदलने के लिए अपना दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है, जिन्हें बदलने की आवश्यकता नहीं है। जैसे कि हर साल मोबाइल फोन को न खरीदना। आमतौर पर फोन की बैट्री क्षमता में मात्र गिराबट देखते ही लोग फोन बदल देते हैं। इससे जेब पर भार तो बढ़ता ही है साथ ही पर्यावरण पर भी अधिक भार पड़ता है। ऐसे में हमें फोन बदलने से पहले सोचने की जरूरत है कि क्या वास्तव में हमें इसकी आवश्यकता है। फोन की औसत उम्र लगभग चार साल की होती है। अगर हम फोन या अन्य इलेक्ट्रोनिक उपकरण का लंबे समय तक इस्तेमाल करें, तो इससे पैसा भी बचेगा और पर्यावरण को फायदा भी होगा।

ई-कचरा की ये समस्या आने वाले समय में और गंभीर समस्या बन सकती है। इसलिए इस समस्या को सामूहिक प्रयास से कम किया जा सकता है जैसे -

(i) कम इलेक्ट्रोनिक सामान खरीदें या जितनी जरूरत हो, उतना ही खरीदें।
(ii) ई-कचरा का दान करें जो किसी और के काम आ सके।
(iii) पुनचक्रण की संभावनाओं पर विचार करें।
(iv) आम-जन को जागरूक करना।
(v) सभी इलेक्ट्रोनिक उपकरण में एक समान चार्जर, ईयरफोन का उपयोग
(vi) सुरक्षित निस्तारण

पूजा कुमारी साव,
कनिष्ठ अनुवादक,
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

जीवन पथ

डरते है अँधेरों से क्योंकि हमें उजालों से प्यार है,
एक दफा देखिए गौर से अँधेरों में भी करार है,

उलझनों के जाल में हौसले जो दम तोड़ रहें,
उसकी तड़पन में भी सफलताओं के राग है,

अब तक की यात्रा के अधूरे,
असफल, टूटे पथ को देखिए,
उनमें भी नव-निर्माण के सार हैं,

हर असंभव में संभाव्यता के आसार हैं,
यही जीवन पथ के आधार हैं,

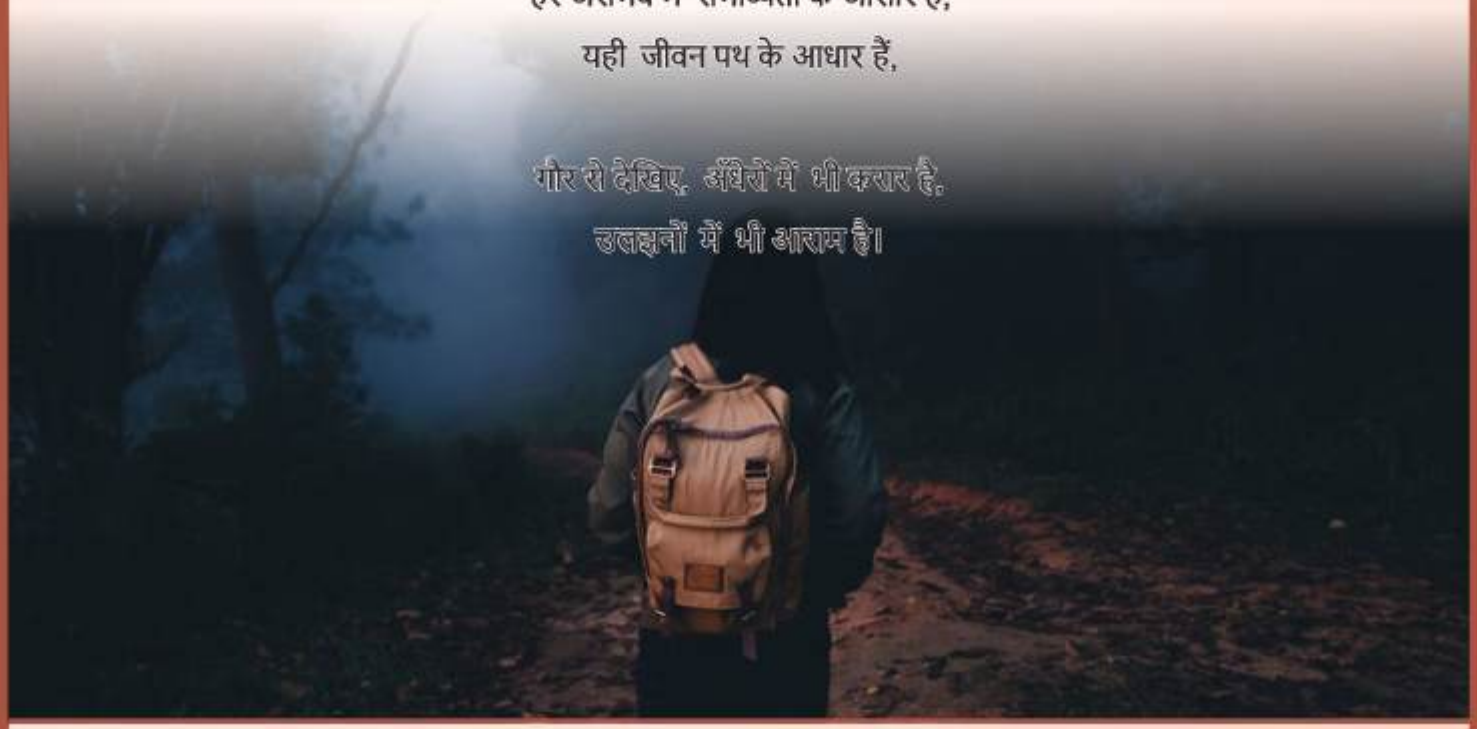

विनोद कुमार,
डी.ई.ओ.,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

आखिर क्यों ?

एक औरत कहती हैः-
मेरे दूध का कर्ज, मेरे ही खून से चुकाते हो,
कुछ इस तरह तुम अपना पौरूष दिखाते हो।

दूध पीकर मेरा तुम, इस दूध को ही लजाते हो,
वाह रे! पुरुष क्या कहना तेरा, तुम खुद को महा पुरूष बताते हो।

हर वक्त मेरे सीने पर नजर तुम जमाते हो,
मेरे सीने में छिपी ममता, क्यों नहीं देख पाते हो।

एक औरत ने जन्मा, पाला-पोसा है तुम्हें,
बड़े होकर यह बात, तुम क्यों ही भूल जाते हो।

तेरे हर एक आँसू पर हजार खुशियाँ कुर्बान कर देती हूँ मैं,
क्यों तुम मेरे हजार आँसू भी नहीं देख पाते हो।

हवस की खातिर आदमी होकर, क्यों नर-पिशाच बन जाते हो,
हमें मर्यादा सिखाने वालो, तुम अपनी मर्यादा क्यों भूल जाते हो।

पूजा है जिसको देवी-देवताओं ने भी वह एक प्यार है,
हर रिश्ते में प्यार के मतलब भी हजार हैं।

ये जरूरी नहीं कि कोई भी रिश्ता स्वार्थ का किरदार हो,
ये इल्तिजा मान लो, तब ही तुम असल इन्सान कहलाने के हकदार हो।

महाराज गुप्ता,
स.ले.प.अ.,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

भौतिक सुख के मानसिक विकार

नमस्ते पाठकों, आज मैं एक ऐसी समस्या पर अपना व्यक्तिगत विचार आप सभी के साथ साझा कर रहा हूँ जिसमें सभी वर्ग, आयु, व समुदाय के लोग किसी न किसी रूप में प्रभावित हो रहे हैं। जी हाँ, और वह समस्या है भौतिक सुखों की चाह, इच्छा, लालसा व तृष्णा एवं उसकी प्राप्ति होने के बाद का प्रभाव तथा साथ ही उसकी प्राप्ति न होने के बाद का प्रभाव जो कि कभी-कभी बड़ी ही भयावह रूप में दिखाई पड़ती है।

चूँकि हम सभी मानव हैं और हमारे अंदर बहुत तरह की भावनाएं, इच्छाएं, अभिलाषाएँ व सुख-दुख की अनुभूति इत्यादि क्षण-प्रतिक्षण आना स्वाभाविक मनोभाव है और इसको चाह कर भी रोक पाना संभव नहीं है, क्योंकि कहा भी गया है कि हमारा मन बहुत चंचल होता है और जिसने अपने मन पर नियंत्रण कर लिया वह एक महान पुरुष की श्रेणी में आ जाता है।

आज की भागमभाग एवं सोशल मीडिया, नई-नई Technology, Mobile, telecommunication से भरी मशीनरी रूपी जिंदगी में सभी आयु के लोग एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगे हुए हैं। अधिकांश की मंजिल कहां है, रुकना कहाँ है, उद्देश्य क्या है, कुछ भी पता नहीं है। बस पीछे वाला हमसे आगे न निकल जाए, इसी चूहा-दौड़ (Rat Running) में अपना मूल्यवान जीवन काट रहे हैं। सभी लोगों को कुछ न कुछ पाने की कभी न खत्म होने वाली लालसा होती है और उसके लिए जी-जान लगाकर कड़ी मेहनत भी करते हैं। फलस्वरूप कुछ लोग सफल भी होते हैं एवं बहुतों को असफलता का कड़वा घूँट भी पीना पड़ता है। अब जो सफल हुए लोग हैं पहले उनकी बात करते हैं। जैसे ही सफलता "चाहे वह कैरियर संबंधी हो या चाहे कोई Dream Object हो की प्राप्ति होती है, तो उस सफलता की महत्ता समाप्त हो जाती है, वह छोटी लगने लगती है और फिर से वे लोग उसी चूहा-दौड़ में शामिल हो जाते हैं, अर्थात कड़ी मेहनत, प्रयास व साधना से मिली सफलता में "चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात" वाली कहावत सिद्ध हो जाती है।

अब बात करते हैं जिन्हें असफलता का स्वाद चखना पड़ा, वे लोग पहले तो कुछ दिन दुःख के गहरे सागर में गोते खाकर शारीरिक कष्ट पाते हैं या असफलता का दोष किसी दूसरे पर थोप कर जी भर-भर कर कोसते हैं जिससे उन्हें कुछ मानसिक शांति की अनुभूति होती है या कुछ वैसे लोग जो ज्यादा ही संवेदनशील होते हैं, वे गहरे तनाव में जाकर अपने तन व मन को बीमार कर मानसिक रोगी बन जाते हैं। कुछ को तो ऐसा लगने लगता है कि अगर सफलता नहीं मिली तो जिंदगी का कोई मतलब ही नहीं और ऐसे कई लोग आत्महत्या जैसा घिनौनी हरकत कर अपने परिवार वालों को रोता-बिलखता छोड़ जाते हैं।

अब सवाल उठता है कि इसका निदान क्या है? तो सबसे पहले हमें यह समझ में आ गया कि चाहे लोग सफल हों या असफल, वास्तव में दोनों ही भौतिक सुखों की चाह में मानसिक विकार से दुखी हैं अर्थात भौतिक सुखों से किसी भी व्यक्ति को स्थायी सुख, शांति, आनंद एवं मानसिक सुख नहीं मिल सकता। अत एव हम लोगों को केवल वर्तमान में रहकर बगैर फल की चिंता किए बिना पूरी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, श्रम एवं स्वस्थ विचारों के साथ अपना कर्म करना चाहिए। अगर कर्म तन-मन व धन से किया जाए तो उसका फल अवश्य ही मिलेगा और आज तक जो भी मिला उसे ईश्वर की कृपा मानकर उसमें संतुष्ट रहना चाहिए। इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि हमें प्रयास नहीं करना है या भविष्य के लिए कोई योजना नहीं बनानी है। आशय यह है कि हमें चिंता नहीं चिंतन करना है और यह समझते हुए कर्म करना है कि इस क्षणभंगुर दुनिया में स्थायी कुछ भी नहीं है इसलिए जिंदगी को ज्यादा Serious लेने की जरूरत नहीं है। अगर जिंदगी में कभी विषम परिस्थिति आए तो जिस तरह कोहरे (Fog) में रास्ता साफ दिखाई न देने पर चालक गाड़ी की रफ्तार कम कर देता है उसी तरह थोड़ा रुक कर मन को नियंत्रित करना चाहिए क्योंकि समय की खास बात यही है कि चाहे अच्छा हो या बुरा वह गुजर ही जाता है।

"जाही विधि रखे राम, वही विधि रहिए,
सीता राम, सीता राम – सीता राम कहिए"।

वज़ीर सिंह,
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

AI

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) कंप्यूटर साइंस का एक क्षेत्र है जो बुद्धिमान मशीनों को बनाने पर केंद्रित है, अर्थात ऐसी मशीनों को बनाने का काम जो ऐसे कार्य करने में सक्षम हैं जिन्हें सामान्य रूप से मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है; और आसान शब्दों में कहूँ तो ए.आई. ऐसी मशीनें हैं जो सीख सकती हैं और अपने दम पर निर्णय ले सकती हैं।

वर्ल्ड इकोनोमिक फोरम ने हाल ही में 'द फ्यूचर ऑफ़ जॉब्स रिपोर्ट 2023' को जारी किया है जिसमें कई महत्वपूर्ण तथ्य सामने आएँ हैं। दुनियाँ भर की 803 कम्पनियों पर किए गए सर्वे के आधार पर इस रिपोर्ट में यह बताया गया है कि अगले पांच साल में 75% कम्पनियों के वर्क फोर्स में बड़े बदलाव होंगे और टेक्नोलॉजी निश्चित रूप से मैन-पावर के काम करने के तरीकों में बदलाव लाएगी। टेक्नोलॉजी में सबसे ज्यादा इस्तेमाल बिग डाटा, क्लाउड कम्प्यूटिंग और ए.आई. फीचर का किया जायेगा।

आने वाले समय में कम्पनियों में ए.आई. का इस्तेमाल बढेगा और बिजनेस से जुड़े ज्यादातर काम मशीनों पर किये जाएँगे। अब तक 34% काम मशीनों द्वारा हो रहे हैं लेकिन अगले पांच वर्षों में 42% काम मशीनें करेंगी। वर्तमान में ए.आई. और मशीन लर्निंग स्पेशलिस्टस की मांग बढ़ रही है और भविष्य में इसमें और तेजी आएगी। इसके अलावा सस्टेनेबिलिटी स्पेशलिस्ट, बिजनेस इंटेलीजेंस एनालिस्ट, इन्फॉर्मेशन सिक्योरिटी एनालिस्ट और सोलर एनेर्जी इंस्टालेशन एण्ड सिस्टम इन्जीनियर्स की भी माँग बढेगी। ए.आई. के फायदों के साथ-साथ ये भी तय है कि भविष्य में कलेरिक्ल कार्यों में मानवीय निर्भरता घटेगी।

भविष्य के फायदे-नुकसान को ध्यान में रखते हुए ही यू.एस.ए. का नेशनल साइंस फाउंडेशन ए.आई. रिसर्च सेंटरों पर 1140 करोड़ रुपये खर्च करेगा। वहाँ की सरकार की पहल से संकेत मिलते हैं कि ए.आई. से सुरक्षा के लिए कदम उठाने की शुरुवात हो चुकी है।

इसे नकारा नहीं जा सकता कि ए.आई. के विस्फोट से ये आशंकाएं भी पैदा हुई हैं कि टेक्नोलॉजी से अर्थव्यवस्थाओं में बदलाव होगा। आपराधिक गतिविधियाँ बढेंगी। दुनियाँ की राजनीति में हलचल मचेगी। विश्व के कई देशों ने ए.आई. टेक्नोलॉज़ी पर नियंत्रण का दबाव महसूस किया है।

ताजा हालातों की बात करें तो पिछले सप्ताह ए.आई. के गॉडफादर के रूप में मशहूर 'ज्याफ्रे हिन्टन' ने गूगल से इसलिए इस्तीफा दिया है ताकि वे टेक्नोलॉज़ी के खतरे पर खुलकर बोल सके।

सिर्फ एक लाईन में कहूं तो विज्ञान/टेक्नोलॉज़ी वरदान भी है और अभिशाप भी; परंतु मानवीय बुद्धिमता से ये हमें तय करना है कि मानवीय बुद्धिमता की हद कहाँ तक रखनी है और मशीनी बुद्धिमता की हद कहाँ तक।

कार्यालय परिसर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

कार्यालय परिसर में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित परीक्षाओं और विजेताओं की तस्वीरें

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह की मुख्य अतिथि महोदया
डॉ के. संगीता, सहायक प्रोफ़ेसर, ओसमानिया विश्वविद्यालय सम्बोधित करते हुए

ए. एन. राधारमणी,
सहायक पर्यवेक्षक,
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

दुनियाँ में कैसे खुश रहा जाए?

इस दुनियाँ में खुश रहने के लिए कुछ चीजों का पालन करना आवश्यक होता है। परिणाम को ध्यान में रखकर किसी भी कार्य को करना चाहिए। प्रत्येक कार्य के प्रति हमें आभारी होना चाहिए एवं उसके प्रति कर्तव्यनिष्ठ भी। ईश्वर ने इस संसार की रचना एक प्रयोजन के साथ की तथा भूमि पर पहाड़ों, खेतों एवं वृक्षों का निर्माण भी परोपकार के उद्देश्य से किया। मनुष्य को ईश्वर ने सोचने के लिए बुद्धि एवं विलक्षण ज्ञान प्रदान किया। हाथों का निर्माण परोपकारी कार्यों के उद्देश्य से किया इसलिए इस बुद्धि एवं अपने दोनों हाथों को परोपकारी कार्यों में प्रयोग करना चाहिए। कोई भी कार्य सम्पूर्ण हृदय से करना चाहिए।

दुनियाँ का मालिक भगवान है। भगवान हर एक व्यक्ति से उसके अन्तःकरण द्वारा बात करते हैं। इस अन्तःकरण को सुनने के लिए कर्तव्यनिष्ठ एवं परोपकारी होना आवश्यक है। अन्तःकरण से आने वाली आवाज को सुनकर उसके ऊपर अमल करने की आदत को विकसित करना चाहिए। सिर्फ अपने हित की बात सोचने से भगवान प्रसन्न नहीं होते। भगवान ने हमारे शरीर के सभी अंगों को विशेष प्रयोजनों के लिए तैयार किया है।

जिस प्रकार मंदिर, मस्जिद, गिरजाघरों एवं गुरुद्वारों में ईश्वर की इबादत की जाती है, उसी प्रकार मनुष्य को भी अपने कार्य स्थल पर अच्छे भाव से कार्य करना चाहिए। यही सभी कर्मचारियों का धर्म है। ज़िंदगी को जीने के लिए और खुश रहने के लिए हमें अपना कार्य पूर्ण निष्ठा के साथ करना चाहिए और साथ ही बुरी आदतों जैसे मद्यपान, तंबाकू, सिगरेट आदि से दूर रहना चाहिए। मनुष्य को पूरे समाज में उसके अच्छे व्यवहार के कारण अपनी एक पहचान बनानी चाहिए। यदि एक मनुष्य खुश रहता है तो उसके साथ पूरा समाज भी खुश रहता है। आचरण के साथ जीने से केवल मनुष्य ही नहीं खुश होता अपितु ईश्वर भी प्रसन्न रहते हैं। मनुष्य के सत्कर्म ही उसकी खुशी की कुंजी है।

कोई तो ऐसा होना चाहिए

ज्योति दीक्षित,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

कुछ भी हो पर ज़िंदगी के इस कठिन सफ़र में, कोई तो ऐसा होना चाहिए,

जिस पर आप आँख मूंदकर भरोसा कर सको,
जिसके सामने बिना सोचे-समझे कुछ भी बोल सको,
जिसके साथ बिना बोले घंटों तक बैठ सको,
जिसे बिना किन्हीं शर्तों के अपना सको,
और जिसके साथ ये मन प्रफुल्लित हो जाए --- कोई तो ऐसा होना चाहिए।

जिसके सामने अपनी नाराजगी जता सको,
जिसे एक छोटी सी मुस्कान से मना सको।
जिसे अपनी हर मुश्किल बता सको,
जिससे कभी कुछ भी न छिपा सको,
और बिना कहे ही जो सब कुछ समझ जाए --- कोई तो ऐसा होना चाहिए।

जिसे केवल इशारों से समझा सको,
बिना शब्दों के अपनी बात पहुँचा सको,
जिसके साथ खिल-खिलाकर हँस सको,
जिसके कंधे पर सर रखकर रो सको,
और जिसके साथ हर मुश्किल आसान हो जाए --- कोई तो ऐसा होना चाहिए।

जिससे आप हमेशा उम्मीद रख सको,
जिसके साथ खुद को सुरक्षित महसूस कर सको,
जिसके बारे में हमेशा दिल से सोच सको,
जिसे पूरे अधिकार से रोक सको,
और जो आपके रोकने से रुक जाए --- कोई तो ऐसा होना चाहिए।

जिससे कुछ भी कह सको,
जिसके साथ खुश रह सको,
जिसकी कमियाँ सह सको,
जिसे हक से अपना कह सको,
और जो आपके जीवन का अभिन्न अंग बन जाए --- कोई तो ऐसा होना चाहिए।

वी. सुधा,
स.ले.प.अ.,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

दोस्ती दुश्मनी

दोस्ती निभाना उतना ही दुष्कर,
जितना दुश्मनी करना किसी से।
दोस्ती और दुश्मनी दोनों ही एक नशा,
जिसमें झूमते दिल के परवाने।

दोस्ती में द्वैत नहीं है,
दोस्ती में द्वेष नहीं है।
दोस्ती तो अनमोल दौलत है,
न खो देना इसे दुर्वाच्य से।

दोस्ती और दुश्मनी दोनों एक समान हैं,
एक प्यार से और दूसरा द्वेष से पनपता है।
सही अर्थ पहचानिए इनका,
तब निभाइए दोस्ती या दुश्मनी।

दोस्ती में जान देते, दुश्मनी में जान लेते,
न करते दीदार दिल का, इस लेन-देन के चक्कर में ।
दोस्ती के इस दर्पण को ,
अपने ही दर्प से न तोड़िए।

(संकलित : स्त्रोत- जानकी अय्यर द्वारा रचित ज्ञान ज्योति)

श्री कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव 'पंकज'
(सेवानिवृत्त प्राध्यापक)
पिता श्री गौरव कृष्ण श्रीवास्तव, व. ले.प.,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

नारी महत्ता

विधि की अनुपम कृति है नारी, हर पल उसका ज्ञान रहे,
अपना मान रहे न रहे पर, हर पल इसका मान रहे।

नर-नारी दोनों की सत्ता, जग में सदा समान है,
पुरूष बिना नारी अपूर्ण तो, नारी पुरूष की प्राण है।

माँ, भगिनी, भाभी, पत्नी बन, ये आँगन महकाती है,
पुत्री बनकर माता-पिता को, नित नव सुख पहुंचाती है।

कन्या भ्रूण हत्या बन्द हो सबको इसका ध्यान रहे,
विधि की अनुपम कृति है नारी, हर पल इसका ज्ञान रहे।

बेटी अगर नहीं होती तो, बहू कहाँ से आएगी,
बिन बहुओं के शिशु-किलकारी, घर में नहीं सुनाएगीं।

बहिन नहीं अगर है घर में, राखी किससे बँधवाओगे,
नवदुर्गा में नौ कन्याओं को, कैसे भोग लगाओगे।

खुशी-खुशी सबके हाथों से होता कन्यादान रहे,
विधि की अनुपम कृति है नारी, हर पल इसका ज्ञान रहे।

नारी का सम्मान जहां पर, देव वहीं पर आते हैं,
अपनी पावन अनुकम्पा से, रिद्धि-सिद्धि वह लाते हैं।

जीवन के सब पतझारों का, अन्त वहीं हो जाता है,
प्राणी जब माँ के चरणों में अपना शीश झुकाता है।

मातृ-शक्ति वंदन करने का, कर-उर में अरमान रहे।
विधि की अनुपम कृति है नारी, हर पल इसका ज्ञान रहे।

राहुल कुमार,
स.ले.प.अ.,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

महँगाई : एक वास्तविकता

बात वो नहीं जिसके चर्चे उड़ रहे हैं,
महंगाई नही साहब खर्चे बढ़ गए हैं।

पहले नानी के घर मनती थी छुट्टियाँ,
आम-अमरूद खाकर मनती थी छुट्टियाँ,
अब तो गोआ मनाली के ट्रिप लग रहे हैं,
महंगाई नही साहब खर्चे बढ़ गए हैं।

सरे राह रोज यूं ही नही मिलते थे लोग,
पहले मीलों मील पैदल चलते थे लोग,
आज दो कदम जाने को कैब बुक कर रहे हैं,
महंगाई नही साहब खर्चे बढ़ गए हैं।

घर में बने खाने पर स्वाद लेकर इतराते थे हम,
नमक संग रोटी भी खुशी-खुशी खाते थे हम,
अब तो हर वीकेंड सब होटल में दिख रहे हैं,
महंगाई नही साहब खर्चे बढ़ गए हैं।

दो जोड़ी कपड़ों में पूरा साल निकलता था,
बस दिवाली के दिन नया जोड़ा सिलता था,
अब तो शौक-फैशन के लिए शापिंग कर रहे हैं,
महंगाई नही साहब खर्चे बढ़ गए हैं।

एक टीवी से पूरा मोहल्ला चलता था,
एक दूरदर्शन से पूरा घर बहलता था,
अब तो चैनलों और वेब के जाल में फंस गए हैं,
महंगाई नही साहब खर्चे बढ़ गए हैं।

पैंतीस पैसे के खत का इंतजार रहता था,
और खत के अंदर हरेले का त्यौहार रहता था,
अब तो बस सब के हाथो में मोबाइल दिख रहे हैं,
महंगाई नही साहब खर्चे बढ़ गए हैं।

हिन्दी भाषा

एन. चन्द्र शेखर,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

विविधताओं के इस देश में,
विभिन्न नदियां हैं भाषाओं की।

कई छोटी हैं कई बड़ी पर,
हिन्दी संगम है इन धाराओं की।

बिना इतराये पानी की भांति,
सहज ही बहती है ये हिन्दी।

निर्भय होकर निरंतर ही,
आगे बढ़ती जाती है हिन्दी।

जैसे पानी का कोई रंग नहीं,
वैसे हिन्दी का कोई ढंग नहीं।

इसके शब्दकोश रूपी सागर में,
नित्य नए शब्द जुड़ जाते हैं।

हिन्दी में मिलकर ये शब्द सभी,
हिन्दी के ही हो जाते हैं।

जिसने भी इसको अपनाया,
यह उसी रूप में उसकी कहलायी।

जैसे अवध में अवधी और,
भोजपुर में भोजपुरी कहलायी।

इसका साहित्य है इतना व्यापक,
फिर भी न कभी इसे दर्प हुआ।

तभी तो बन गई ये महासागर,
जिसमें विशाल शब्दकोश है समाया हुआ।

जिस दिन हम सभी मिलकर,
इसकी शक्ति को समझ जाएंगे।

उस दिन हम निश्चय ही,
अपनी हिन्दी भाषा पर इतराएंगे।

सोमबीर,
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

आओ फिर से दिया जलाएँ

आओ फिर से दिया जलाएँ
भरी दुपहरी में अँधियारा
सूरज परछाई से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें-
बुझी हुई बाती सुलगाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

हम पड़ाव को समझे मंज़िल
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वर्त्तमान के मोहजाल में-
आने वाला कल न भुलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा
अपनों के विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने-
नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

(संकलित: स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी)

रोहित,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

फलेगी डालों में तलवार

धनी दे रहे सकल सर्वस्व,
तुम्हें इतिहास दे रहा मान;
सहस्रों बलशाली शार्दूल
चरण पर चढ़ा रहे हैं प्राण।

दौड़ती हुई तुम्हारी ओर
जा रहीं नदियाँ विकल, अधीर
करोड़ों आँखें पगली हुईं,
ध्यान में झलक उठी तस्वीर।

पटल जैसे-जैसे उठ रहा,
फैलता जाता है भूडोल।

हिमालय रजत-कोष ले खड़ा
हिन्द-सागर ले खड़ा प्रवाल,
देश के दरवाजे पर रोज
खड़ी होती ऊषा ले माल।

कि जानें तुम आओ किस रोज
बजाते नूतन रुद्र-विषाण,
किरण के रथ पर हो आसीन
लिये मुट्ठी में स्वर्ण-विहान।

स्वर्ग जो हाथों को है दूर,
खेलता उससे भी मन लुब्ध।

धनी देते जिसको सर्वस्व,
चढ़ाने बली जिसे निज प्राण,
उसी का लेकर पावन नाम
कलम बोती है अपने गान।

गान, जिसके भीतर संतप्त
जाति का जलता है आकाश;
उबलते गरल, द्रोह, प्रतिशोध
दर्प से बलता है विश्वास।

देश की मिट्टी का असि-वृक्ष,
गान-तरु होगा जब तैयार,
खिलेंगे अंगारों के फूल
फलेगी डालों में तलवार।

चटकती चिनगारी के फूल,
सजीले वृन्तों के श्रृंगार,
विवशता के विषजल में बुझी,
गीत की, आँसू की तलवार।

(संकलित: स्वर्गीय श्री रामधारी सिंह दिनकर जी)

कल्पना वर्मा,
वरिष्ठ अनुवादक,
कार्यालय प्र.म.ले. (ले. एवं ह.) तेलंगाना

मैं और मेरी कविता

मैं और मेरी कविता
सुख - दु:ख के अटूट साथी हैं,
कुछ अफसानें मैं कहती हूँ,
कुछ किस्सागोई दोनों में होती है,
मैं और मेरी कविता....

नित नए स्वपनों को बुनते हैं,
स्याह रंग में भिगोकर,
पृष्ठों पर शब्द गढ़ते हैं,
मैं और मेरी कविता...

रहस्मयी स्थानों पर जाते हैं,
सुरागों से आती रोशनी देखकर,
खूब उछल - कूद मचाते हैं,
मैं और मेरी कविता.....

अक्सर बचपन में खो जाते हैं,
कभी सर्दियों में गुड खाते हैं,
तो कभी भरी दोपहरी सो जाते हैं,
मैं और मेरी कविता...

आल्हादित मन खो जाते हैं,
मदहोश बसंत में पुलकित होकर,
गुलाबी गीत गाते हैं,
मैं और मेरी कविता...

दीपक कुमार,
आशुलिपिक / हिन्दी अनुभाग,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

समंदर सारे शराब होते

समंदर सारे शराब होते,
तो सोचो कितना बवाल होता।
हक़ीक़त सारे ख्वाब होते,
तो सोचो कितना बवाल होता।

किसी के दिल में क्या छुपा है,
ये बस ख़ुदा ही जानता है।
दिल अगर बेनकाब होते,
तो सोचो कितना बवाल होता।

थी खामोशी हमारी फितरत में,
तभी तो वर्षों निभ गई लोगों से,
अगर मुँह में हमारे जवाब होते,
तो सोचो कितना बवाल होता।

हम तो अच्छे थे पर,
लोगों की नज़र में सदा बुरे ही रहे,
कहीं हम सच में खराब होते,
तो सोचो कितना बवाल होता।

(संकलित - मोहसिन नक़वी)

ओ. श्रीविद्या,
कार्यालय क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, हैदराबाद

वर्षा के संगीत

झूम-झूम आज धरती गाए,
सावन के मतवाले गीत,
उमड़-घुमड़ बादल छाए,
बोल उठे प्रेमी के प्रीत।

रिमझिम रिमझिम बूंदें इठलाए,
छप-छप करते बालक के पैर,
बरस-बरस कर बरसा इतराए,
संगीत बनाती छत की टीन।

सन-सन हवा गुनगुनाए,
झूम उठें पेड़ों के पत्ते,
चम-चम बिजली गरजे,
महक उठे आँगन व खेत।

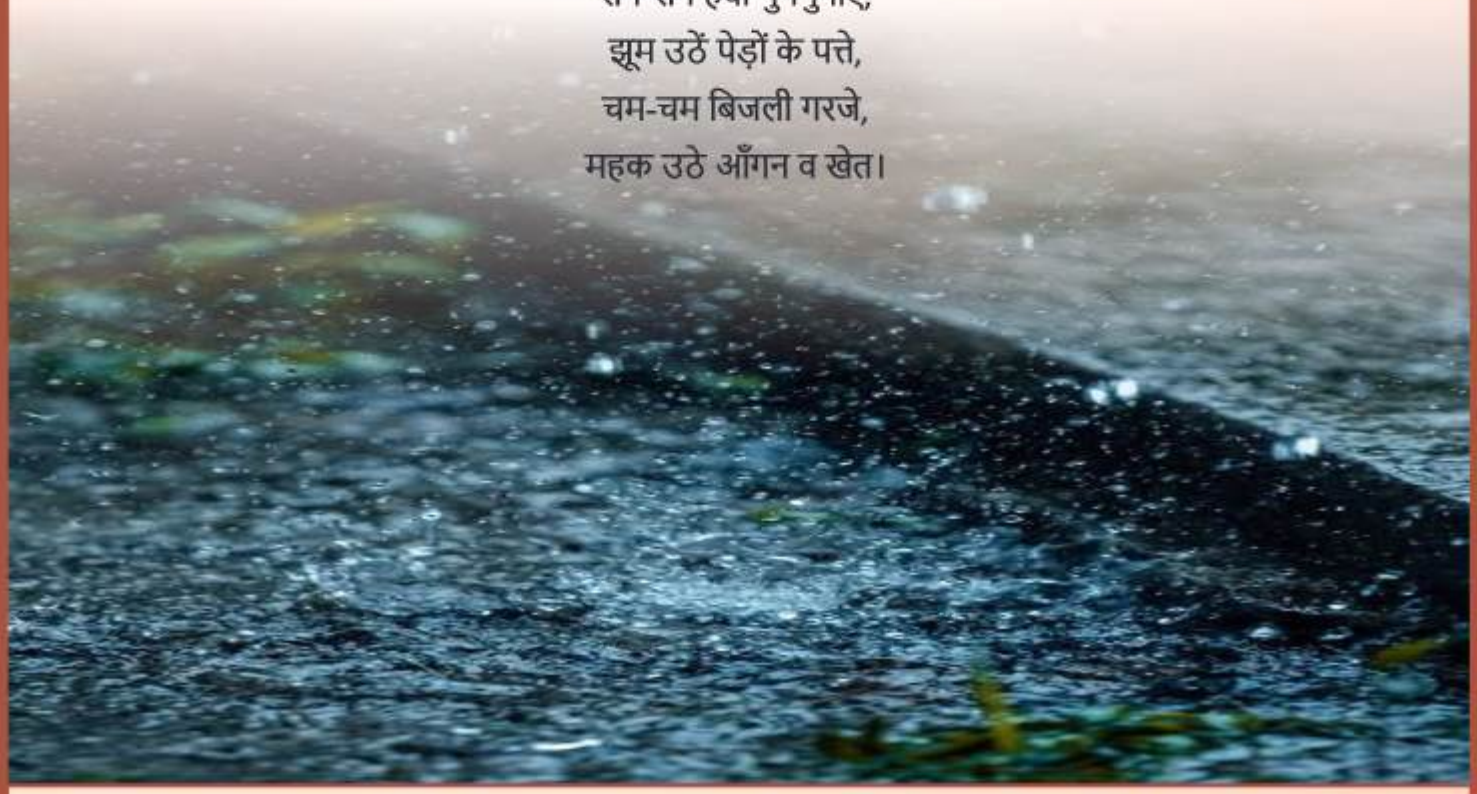

के. वी. किशोर कुमार,
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

त्रिवर्णां त्रिवर्णां !!

त्रिवर्णां समवर्तनां
व्यापितां आसेतुहिमाचलं
विस्तृतां अरुणाचलकोटेश्वरं
प्रतिष्टितां धरणीगर्भगगनांतं
त्रिवर्णां समवर्तनां
त्रिवर्णां

मनोवैशाल्य संकेतनीं
नानाविध आराधनीं
बहुजनहृदयकामिनीं

त्रिवर्णां
अग्रकेसरवर्णां
गंभीरमारुतगमनां
मृगराजसदृश्यां
योगव्रतांवीरधृतां

त्रिवर्णां
धवळमध्यमप्रकाशितां
करुणारसप्रवाहितां
ज्ञानगंगाविराजितां
प्रशांतपरवशहासिनीं

त्रिवर्णां
आधारहरितस्थितां
नृत्यकेयुरपिंछसमचलितां
निरंतरपुरोगमनसंकल्पितां
वनानंदसौंदर्यविलासिनीं

त्रिवर्णां
नीलचक्रसहितां
प्रगतिशीलां धर्माचरणप्रभोधिनीं
अनुदिनप्रवर्थमानचिह्नां

त्रिवर्णां प्रणमाम्यहं
त्रिवर्णां भजेम्याहं

श्री धृति,
सुपुत्री श्री चारुदत्त, स.ले.प.अ.,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

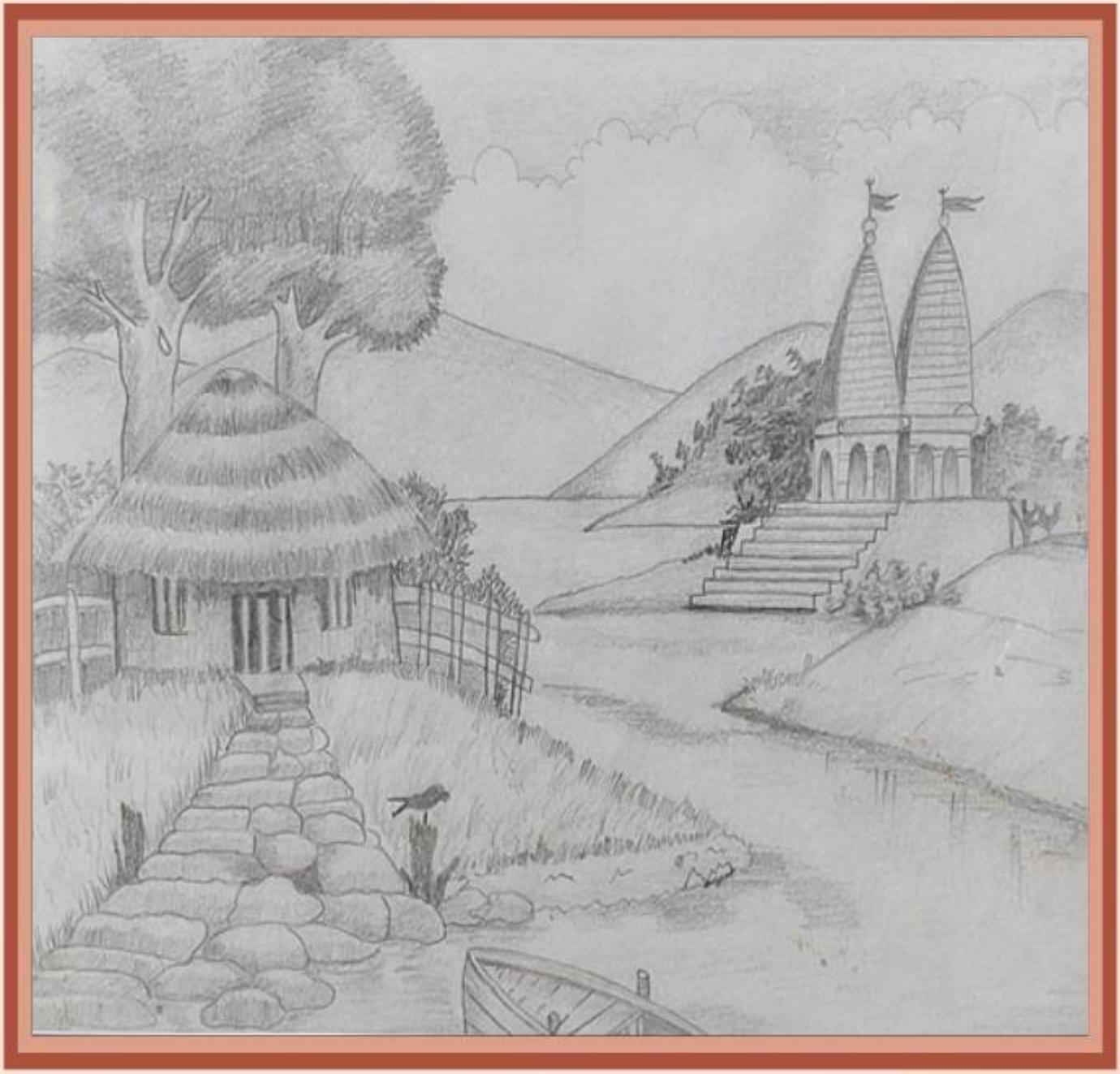

के. एस. विजय,
पर्यवेक्षक,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

नवल किशोर शर्मा,
स.ले.प.अ.,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

हाय रे बेटी तेरी यही कहानी

पुत्र जनमते जश्न मनाए, पुत्री गम हो जाए,
बता क्या हो रहा है, बता क्या हो रहा है?

सुनों ये दुनिया वालों, क्या यही सच्चा दस्तूर है,
हाय रे जमाना सोचों, बेटी का इसमें क्या कसूर है,
पुत्र जनमते जश्न मनाए, पुत्री गम हो जाए,
बता क्या हो रहा है, बता क्या हो रहा है?

बेटा और बेटी दोनों, एक ही उपवन के फूल हैं,
एक ही माली जिनका, सींचता बगीचे का मूल है,
हुई सयानी बिटिया घर में, आफत घिर आ जाए,
बता क्या हो रहा है, बता क्या हो रहा है?

बेटा हो काला मूरख, बहू सूरजमुखी फूल हो,
साथ में रुपया पैसा, दान दहेज भरपूर हो,
फिर भी वे इंसान कहाते और शान दिखलाते,
बता क्या हो रहा है, बता क्या हो रहा है?

सोचो ये दुनिया वालों, बेटी क्या नहीं इंसान है,
देश के निर्माण में, क्या इनका नहीं योगदान है,
समता का निर्माण करें हम, इनका जीवन संवारे,

सी. सचिन,
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय म.ले. (ले.प.) ते.रा.

शहर का दामाद

बात उन दिनों की है जब मेरी नई-नई शादी हुई थी। कितने शानदार थे वो दिन। दिन अभी भी अद्‌भुत हैं लेकिन नवविवाहितों का एहसास बिल्कुल अलग होता है। नवविवाहितों को ऐसा लगता है कि उनकी दुनियाँ अचानक बदल गई है। आपको बहुत सी चीजें पसंद आने लगेंगी। उन दिनों मेरा हाल भी कुछ ऐसा ही था। उन दिनों मैं बहुत खुश था और अपनी पत्नी के साथ घूमने के लिए हमेशा उत्सुक रहता था जैसा कि हर नवविवाहित के साथ होता है। हम हमेशा घर से बाहर जाने के लिए कारण की तलाश में रहते थे जैसे – कभी फिल्में देखने, कभी रिश्तेदारों के घर जाने और कभी रेस्तरां जाने आदि। जहाँ कहीं भी हमें जाना होता था, मैं अपने मामा की दो पहिया गाड़ी उनसे उधार लेता और वहाँ जाने के लिए हम दोनों पति-पत्नी रवाना हो जाते थे।

हालांकि मैं पुणे शहर जानता था लेकिन ज्यादा अच्छी तरह से नहीं। दिन बखूबी बीत रहे थे। मुझे एक घटना याद है जिसने मेरे पहले से ही खुशहाल जीवन को और भी खुशनुमा बना दिया। एक दिन मैं अपने ससुराल से किसी ऐसी जगह जाने के लिए निकला जो अब मुझे याद नहीं है। बड़े आश्चर्य की बात है कि मुझे घटना याद है लेकिन मंजिल नहीं क्योंकि घटना थी ही कुछ ऐसी।

आम तौर पर जब भी मैं अपनी गाड़ी लेकर निकलता था, अपनी पत्नी के साथ ढेर सारी बातें करता था, जो एक नवविवाहित के लिए सामान्य है,इसलिए एकाग्रता विषय पर होती थी न कि सड़क पर। उस दिन मैं ट्रैफिक के साथ-साथ टर्न ले रहा था और आगे बढ़ रहा था। तभी मुझे एक पुल दिखाई दिया और जब मैं पुल पार कर रहा था, अचानक मैंने देखा कि पुल के अंत में कुछ ट्रैफिक पुलिसकर्मी मुझे गाड़ी रोकने का इशारा कर रहे थे।

पुलिस द्वारा रोके जाने पर मुझे थोड़ा बुरा आभास हुआ लेकिन तुरंत ही एक अच्छा एहसास भी हुआ क्योंकि गाड़ी चलाते समय जिन आवश्यक दस्तावेजों को साथ रखना चाहिए, वे सभी मेरे पास थे। मैं गाड़ी किनारे रोक ही रहा था कि इतने में मेरी पत्नी ने धीरे से मेरे कानों में कहा - "हम जो पुल पार कर आए हैं, वह 'केवल चौपहिया' (only four wheelers) वाहनों के लिए है।" मैंने अपनी पत्नी से कहा – "लेकिन मैंने पुल की शुरुआत में ऐसा कोई संकेत नहीं देखा! वैसे भी, अब जब हम पुल पार कर चुके ही हैं, तो हमें परिणाम तो भुगतना ही पड़ेगा।" पुलिसवालों को भी शायद लगा होगा कि आज बकरा पकड़ में आ गया। धीरे-धीरे मैंने अपनी गाड़ी को सड़क के किनारे खड़ा कर दिया और पुलिसवाले के पास पहुंचा।

जैसे ही मैं उनसे मिला, उनमें से एक पुलिस वाले ने कहा– "हा रस्ता फ़क्त चार चाकीं साठी आहे हे, तुम्हाला माहीत नाही का ? "

मैंने कहा - "सर, मुझे मराठी नहीं आती"।

तब पुलिस वाले ने कहा- "क्या आप नहीं जानते कि यह सड़क केवल चौपहिया वाहनों के लिए है ?"

मैंने कहा- "सर, मैं इस शहर से नहीं हूँ और मैं यहाँ के रास्तों और नियमों से परिचित भी नहीं हूँ।"

पुलिस वाले ने मुझसे पूछा - "तो फिर तुम कहाँ से हो"?

मैंने उत्तर दिया - "मैं हैदराबाद से हूँ और मेरी पत्नी पुणे से है। हम दोनों एक रिश्तेदार से मिलने जा रहे हैं और मैं पुणे में इस मार्ग पर पहली बार दो पहिया गाड़ी चला रहा हूँ।"

पुलिस वाले ने पूछा "इस पुल की शुरुआत में ही एक साइन बोर्ड है जिस पर लिखा है कि इस पुल मार्ग पर केवल चौपहिया वाहनों को जाने की अनुमति है। क्या आपने वह साइन बोर्ड नहीं देखा?"

मैंने कहा, "मैंने उस साइन बोर्ड पर ध्यान नहीं दिया क्योंकि मैं गाड़ी चलाते समय सीधे देख रहा था।"

उसे क्या पता था कि मैं अपनी नवविवाहित पत्नी से बातें करने में व्यस्त था!

पुलिस वाले ने कहा, "आप पर नियम तोड़ने के लिए जुर्माना लगेगा। आपका चालान किया जाएगा।"
मैंने कहा "ठीक है सर, जैसा आप ठीक समझें।" इतना कहते ही मैंने उसे अपना ऑफिस आईडी कार्ड दिखाया और कहा कि मैं हैदराबाद में काम करता हूँ और अभी हाल ही में मेरी शादी हुई है।

फिर उसने मेरी पत्नी से पूछा "मैडम, आप तो इस शहर की हैं, तो आपने अपने पति को इस बारे में बताया क्यों नहीं?"

मेरी पत्नी ने कहा, "मैं इस रास्ते से पहले कभी नहीं आई थी।"

फिर उस पुलिस वाले ने अपने वरिष्ठ पुलिसकर्मी से कुछ देर बात की और फिर मेरे पास वापस आया और कहा, "जाइए साहब, हम इस शहर के दामाद का चालान कैसे कर सकते हैं?" यह कहकर उसने बिना कोई जुर्माना लगाए मुझे छोड़ दिया।

शहर का दामाद?

उनकी बातें मेरे दिल को छू गई। मुझे बहुत अच्छा लगा और मैंने मन ही मन सोचा, क्या पुलिसवाले इतने अच्छे होते हैं? मैं पहले से ही अच्छा महसूस कर रहा था और इस विशेष घटना ने मुझे और भी खुश कर दिया तथा इस तरह शहर के प्रति मेरा प्यार बढ़ता चला गया।

राजभाषा सम्मलेन 2022, सूरत

वज़ीर सिंह,
हिंदी अधिकारी,

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के तत्वाधान में हिंदी दिवस समारोह 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन का संयुक्त आयोजन 14-15 सितंबर 2022 को सूरत (गुजरात) के दीन दयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम में बड़े भव्य एवं गरिमामयी रूप से किया गया। कार्यक्रम का उद्घघाटन दिनाँक 14 सितंबर 2022 को भारत के माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के द्वारा किया गया। समारोह में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्रभाई पटेल, केंद्रीय गृह राज्य मंत्रीगण श्री अजय कुमार मिश्रा, श्री नित्यानंद राय और श्री निशीथ प्रमाणिक और अन्य माननीय मंत्रीगणों तथा सांसदगणों की गरिमामयी उपस्थिति भी मंच पर रही। मंचासीन राजनेताओं के द्वारा समारोह का विधिवत्त उद्घघाटन करते हुए द्वीप प्रज्जवलित किया गया और साथ ही साथ केंद्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा मंत्रो का सुरीला एवं स्पष्ट पाठ भी किया गया:

"शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धनसंपदा,
शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपज्योति नमोऽस्तु।
चन्द्रमा मनसो जाताश्चक्षो सूर्यो अजायत,
श्रोत्रामवायुशच प्राणशच मुखआद्गनी।"

दो दिन के इस समारोह में देश के प्रबुद्ध विशिष्टजनों के विचारों को सुनने का अवसर सभी मंत्रालयों / विभागों / सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों के राजभाषा संवर्ग के अधिकारियों / कर्मचारियों को मिला; साथ ही साथ राजभाषा संवर्ग के साथियों ने भी अपने शांत स्वभाव और राजभाषा के प्रति समर्पण का अहसास पूरे राष्ट्र को करवाया।

इस सम्मलेन में कुछ तो ख़ास बात थी जिसने इसे जीवन भर के लिए यादगार बना दिया, सब कुछ साफ याद है कि कैसे यह समारोह भारत के केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह जी के सम्बोधन से शुरू होकर विभिन्न सत्रों में श्रीमती रीता बहुगुणा और श्री प्रसून जोशी जैसे विद्वानों, श्री निशांत जैन और श्री गंगा सिंह जैसे प्रशासनिक अधिकारियों, श्री पंकज त्रिपाठी और श्री महेश मांजरेकर जैसे अभिनेताओं को साथ लेकर चला, कैसे सूरत पुलिस कमिश्नर श्री अजय कुमार तोमर जैसे जबरदस्त वक्ता के जबरदस्त उद्बोधन के बाद तालियों की गड़-गड़ाहट से पूरा ऑडिटोरिम गूँज उठा था इत्यादि बहुत कुछ आज भी जैसे आँखों के सामने महसूस हो रहा है। इन सब पर विस्तृत व्याख्या करने से पहले यह कहना अनिवार्य है कि राजभाषा सम्मलेनों का आयोजन बहुत ही सराहनीय कदम है और इनके अनवरत आयोजन का जैसा स्वागत होता रहा है वैसा ही सदैव होता रहेगा।

भारत के आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने लाल किले से कहा था कि हम सबको राजनैतिक दासता से मुक्ति तो 1947 में मिल गई थी, पर सांस्कृतिक दासता से मुक्ति कब मिलेगी। सूरत में आयोजित सम्मलेन में मुख्य वक्ताओं का सम्बोधन इसी कथन की विस्तृत व्याख्या करने के आस-पास केंद्रित रहा। फिर वो चाहे आदरणीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के द्वारा मातृभाषा में मूल सोच विकसित करने तथा बेहिचक और मुखर होकर हिंदी में काम करने की बात हो या श्री भृतहरी जी, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष द्वारा कार्यालयों में हिंदी अधिकारियों की दयनीय स्थिति पर चर्चा करते हुए इसमें आवश्यक सुधारों की माँग की बात हो या श्री प्रसून जोशी के द्वारा हमारे राष्ट्र को किसी भाषा का अनुवादित राष्ट्र ना बनाकर उसे मौलिक सोच वाला राष्ट्र बनाने की बात हो या प्रो. रीता बहुगुणा, सांसद महोदया के द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों को कार्यक्रम समाप्ति के बाद अगले एक महीने में राजभाषा संकल्प 1963 की 100% अनुपालना सुनिश्चित करने की बात हो; इन सभी कथनों का निचोड़ यह था कि विचारों का जनक हमारी मूल सोच है जो केवल मातृभाषा में होती है इसीलिए हमें अपनी मातृभाषा और भारत की भाषा हिंदी को सम्मान के साथ सीखना चाहिए और इसे स्वीकार करना चाहिए क्यूँकि स्वसम्मान और राष्ट्रवाद अपनी भाषा में ही संभव है, इसे अगर एक लाइन में कहा जाए तो कल का "राजपथ" आज का "कर्तव्यपथ" है।

माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मत्री श्री अमित शाह जी ने अपने उद्धबोधन में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर बल देने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि जितना बेहतर मौलिक चिंतन मातृभाषा में हो सकता है उतना किसी अन्य भाषा में नहीं हो सकता। इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री ने 'हिंदी शब्द सिंधु शब्दकोश' का विमोचन और 'कंठस्थ 2.0' का उद्धघाटन किया। उनके सम्बोधन के बाद गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भी सम्बोधित किया।

दिनाँक 14 सितंबर 2022 के द्वितीय सत्र में प्रसून जोशी ने हिंदी के स्वरुप और शब्दों के शब्दों के चयन पर बड़ा ही सूक्ष्म अंतर समझाया। उन्होंने शब्दों के अपनेपन को समझने के लिए कहा कि ये सच है कि 'एस.एम.एस. आना उतना दिल को नही छूता जितना यह कहना की "संदेशे" आते हैं।' भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्यरत दो अधिकारियों के रूप में श्री गंगा सिंह जी और श्री निशांत जैन जी ने भी संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में उनका माध्यम हिंदी होने तथा उसमें सफलता मिलने के अनुभव दृढ़ता से रखे। फिर अभिनेता श्री पंकज त्रिपाठी ने हिंदी को खुद उनके जीवन अनुभव से जोड़ते हुए हिंदी के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने वहाँ मौजूद श्रोताओं से संवाद भी किया और लोगों ने भी उनसे आखिरकार उनका बोला गया वह प्रसिद्ध डायलॉग बुलवा ही लिया

जिसमें वो अभिनेत्री को आकर्षित करने के मोहवश उसे खीर प्रस्तुत करते हैं। खीर खाते हुए जब अभिनेत्री ने उनसे पूछा कि, "आप अकेले रहते हैं?" तो अपने परिवार की व्याख्या करते हुए त्रिपाठी जी तुरंत जवाब देते हैं कि "नहीं, हम पिताजी के साथ रहते हैं, पिताजी अकेले रहतें हैं।" दरअसल उस डायलॉग में सिर्फ हँसी नहीं थी बल्कि उसमें व्यंग्य भी था, मर्म भी था और दर्द भी था।

इस सम्मलेन के दूसरे दिन अर्थात दिनाँक 15 सितंबर 2022 के प्रथम सत्र का विषय "महात्मा गाँधी का भाषा चिंतन और राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान" था। इस सत्र का शुभारंभ प्रो. रीता बहुगुणा जोशी, लोकसभा सांसद, प्रयागराज, ने अपने वक्तव्य से किया। उन्होंने बड़ी बारीकी से महात्मा गाँधी के भाषा चिंतन एवं सरदार पटेल के देश के एकीकरण में योगदान को चित्रित किया। वह सम्मलेन में राजभाषा सदस्यों की उपस्थिति देखकर अभिभूत हो गईं; उन्होंने महात्मा गाँधी के भाषा चिंतन पर प्रकाश ड़ालते हुए कहा कि गाँधी और पटेल के दायरे अलग-अलग हैं। गाँधी का चिंतन वैश्विक चिंतन है और वह युगों-युगों तक विश्व को दिशा देता रहेगा। उन्होंने बताया कि गाँधी जी का मानना था कि हिंदी उनके लिए स्वराज का प्रश्न है। उन्होंने प्रांतीय भाषाओं के विकास पर भी बल दिया। गाँधी जी एक बार काशी विश्वविद्यालय गए तो वहां उपस्थित सभी वक्ताओं ने अंग्रेजी में भाषण दिया लेकिन गाँधी जी ने कहा, "मैं भी अपना भाषण अंग्रेजी में लिखकर लाया हूँ लेकिन मैं हिंदी में ही बोलूँगा। इसी तरह 1917 में भागलपुर में सभी वक्ताओं के अंग्रेजी में अपनी बात रखने के बाद उन्होने हिंदी में ही अपनी बात रखी। कांग्रेस के अधिवेशनों में भी उनका यही प्रयास होता था कि अधिकतर लोग अपनी बातें हिंदी में ही रखे।

प्रो. जोशी ने एक और पुराना किस्सा सुनाते हुए कहा कि जब भारत की आजादी के बाद पत्रकारों ने महात्मा गाँधी जी से पूछा, "आप जनता को क्या संदेश देना चाहते हैं ?" तो उन्होंने जवाब दिया, "कृपया दुनियाँ को यह खबर दे दें कि गाँधी अंग्रेजी भूल गया है।" प्रो. जोशी ने अपने भाषण के दूसरे अंश में भारत के एकीकरण में सरदार पटेल के योगदान पर प्रकाश डाला। सरदार पटेल ने देशी रियासतों/रजवाड़ों का भारत में विलय करने का सराहनीय कार्य किया इसीलिए उन्हें 'भारत का बिस्मार्क' भी कहा जाता है। बिस्मार्क ने 15-16 वर्षों में जर्मनी के 38 राज्यों का विलय किया था लेकिन सरदार ने तीन वर्ष में ही 565 देशी रियासतों/रजवाड़ों का भारत में विलय कर दिया था। उनकी बेहतरीन नेतृत्व क्षमता को देखकर आजादी से बहुत पहले ही बारदोली की महिलाओं ने उन्हें 'सरदार' की उपाधि दी थी तथा महात्मा गाँधी ने उन्हे 'लौह पुरुष' कहा था। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने अंग्रेजी का बेहतरीन ज्ञान होते हुए भी हिंदी को सम्मान दिया। उन्होनें "कदम-कदम बढ़ाए जा...." को आजाद हिन्द फ़ौज का गीत चुना। शहीद भगत सिंह ने भी 'मेरा रंग दे बसंती चोला रंग दे.....' का गान किया। प्रो. जोशी ने आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के अवसर पर हिंदी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाने पर बल देने और इसके सहज और सरल रूप को चुनने की सलाह देते हए अपना सम्बोधन समाप्त किया।

इस सत्र के दूसरे वक्ता श्री राम मोहन पाठक, भूतपूर्व कुलपति, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, ने कहा कि हिंदी भाव और भावनाओं की भाषा है। उन्होने सोहन लाल द्विवेदी की कविता का उदाहरण देते हुए गाँधी जी के विशाल व्यक्तित्व का परिचय दिया।

चल पड़े जिधर दो डग,
मग में चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि,
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर,

उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने तो भारत छोड़ दिया अब हमें भी अंग्रेजी को छोड़ने का प्रयास करना पड़ेगा। राजभाषा की स्थिति उन्नयन हेतु उन्होंने श्री दुष्यंत कुमार की कविता का उद्धाहरण देते हुए जोर देकर कहा कि राजभाषा के साथ-साथ इसके सिपहसालारों की भी सूरत बदलनी चाहिए। उन्होंने दुष्यंत जी को याद करते हुए गुनगुनाया कि

"हंगामा खड़ा करना, मेरा मकसद नही,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।"

श्री पाठक ने बताया कि गाँधी जी के हिंदी के प्रति प्रेम में मूल काशी था। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के नाटक का मंचन गाँधी जी के गृहनगर पोरबंदर में हो रहा था जिसे गाँधी जी ने कई बार देखा था जिससे उनके मन में स्वदेशी भाषा के प्रति प्रेम जागा। गाँधी जी को चंपारण आन्दोलन के समय स्थानीय भाषा की महत्ता का ज्ञान हुआ। गाँधी जी ने 'हिन्द स्वराज' में राजभाषा संबंधित विचार प्रकट किया था। 'मेरे सपनों के भारत' में गाँधी जी ने राजभाषा के पांच लक्षण बताये हैं। गाँधी जी ने कहा था कि हम इतनी मेहनत अपने बच्चों को अंग्रेजी सिखाने में करते हैं, इससे बड़ी गुलामी क्या हो सकती है। हिंदी की सूरत बदलनी चाहिए और हिंदी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयास होना चाहिए। श्री पाठक ने अपने वक्तव्य के दूसरे अंश में सरदार पटेल के विषय में चर्चा की। उन्होने कहा कि लोकतंत्र का जहाज जहाँ भटकता है गाँधी और सरदार पटेल रूपी प्रकाश पुंज हमारा मार्गदर्शन करते हैं। राजभाषा की अवधारणा इन्ही दो महापुरुषों की देन है। श्री पाठक ने विशेष रूप से आह्वान किया कि हिंदी को राजभाषा के स्थान पर 'कर्तव्य भाषा' के रूप में अंगीकृत और व्यवहारित किया जाना उचित होगा।

इस सत्र के अगले वक्ता श्री रामशंकर दुबे, कुलपति, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गुजरात की पवित्र धरती गाँधी और सरदार पटेल की धरती है। इसी भूमि से गाँधी जी ने विश्व शांति का संदेश दिया था।

मैकाले की चर्चा करते हुए गाँधी जी ने कहा कि मैकाले ने न सिर्फ हमारी शिक्षा पद्धति को बर्बाद किया बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर को भी नष्ट किया। भारत की समृद्धि इसकी हजारों-हजार साल पुरानी संस्कृति है। मैकाले द्वारा थोपी गई शिक्षा पर महात्मा गाँधी का विचार था कि यह हमें अंग्रेजों की गुलामी की ओर ले जा रही है। महात्मा गाँधी ने 'हिन्द-स्वराज' में लिखा कि यहाँ के लोग अपने-अपने बच्चों को नीतिशिक्षा दें, सदाचार की शिक्षा दें और यह शिक्षा अपनी निजी भाषा में दें। भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए महामना मदन मोहन मालवीय ने 1916 में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी जिसका उद्धघाटन महात्मा गाँधी ने किया था जिसमें सभी ने अंग्रेजी में भाषण दिया था परन्तु गाँधी जी ने अपना भाषण ऐनी बेसेंट के टोकने के बावजूद भी हिंदी में ही दिया। गाँधी जी ने अपने भाषण में कहा कि इस विश्वविद्यालय के अंदर अंग्रेजी में भाषण देना हिंदी का अपमान है। उन्होंने आगे कहा कि सरदार पटेल ने 565 देशी रियासतों/रजवाड़ों के एकीकरण से भारत के जिस निर्माण की शुरुवात की थी वह धारा 370 को समाप्त कर के वर्ष 2019 में पूर्णतः सम्पन्न हआ।

उस सत्र के अंतिम वक्ता और सत्र के अध्यक्ष माननीय श्री हृदय नारायण दीक्षित जो उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष भी हैं ने कहा कि मैं एक छोटे से जिले से आकर आप सभी के साथ संवाद कर रहा हूँ यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। चूँकि उनका सम्बोधन अंतिम था तो उन्होनें माहौल को हल्का बनाने के लिए कहा, 'मैं जो रटकर आया था वह तो पहले के वक्ताओं ने बोल ही दिया तो अब मैं टटोल-टटोल कर बात करूंगा', जिसका स्वागत सभागार में मौजूद श्रोताओं ने तालियों से किया। उन्होंने हँसी-ठिठोली के माहौल में अंग्रेजी और हिंदी के अंतर को मजाकिया लहजे में समझाते हुए एक और किस्सा सुनाया जब उन्होंने अपने सामने रखे माईक को 'मिस्टर माईक' और गोस्वामी तुलसीदास का उद्धरण 'गोस्वामी टी.डी." (यानि तुलसीदास) के रूप में देने से अचानक लोगों का ध्यान आकर्षित किया था। श्री दीक्षित ने बताया कि हिंदी और अन्य जनभाषा स्वतंत्रता संग्राम की भाषा थी लेकिन उस समय के राजनीतिज्ञों के मन में अंग्रेजी रची बसी थी। महात्मा गाँधी ने भी एक बार कहा था कि वे अंग्रेजों के साथ-साथ अंग्रेजी को भी भारत से बाहर खदेड़ देंगे। उन्होंने आगे बताया कि गाँधी जी ने 1930 में कहा था, "मैं हिंदी बोलता हूँ और अगर वायसराय से भी बात करूँगा तो अपनी भाषा हिंदी में ही करूँगा।"

दिनाँक 15 सितंबर 2022 के अगले सत्र का विषय था - 'भाषाई समन्वय का आधार है हिंदी'। इस सत्र में मुख्य वक्ता श्री आलोक मेहता, वरिष्ठ पत्रकार थे जिन्होंने भाषा और इसके सामाजिक पहलुओं पर प्रकाश डाला। इस सत्र के दूसरे वक्ता शास्त्री जी थे जो संस्कृत के प्रखंड विद्वान हैं और उन्होंने भी अपनी बात बड़ी गंभीरता से रखी। इस सत्र के तीसरे वक्ता के रूप में थी श्रीमती संगीता यादव जी जिन्होंने हिंदी के प्रयोग में आने वाली व्यवहारिक समस्याओं और अंग्रेजी के अनावश्यक प्रभाव पर चर्चा की। इस सत्र की अंतिम वक्ता थी श्रीमती पूनमबेन हेमंतभाई मादाम , लोकसभा सांसद, जामनगर गुजरात, जिन्होंने राजभाषा के महत्व पर अपनी बात बाकी वक्ताओं की तरह बड़ी दृढ़ता से रखी थी।

अगले सत्र का विषय था - 'भारतीय सिनेमा और हिंदी'। इस सत्र के पहले वक्ता थे श्री अजय कुमार तोमर, पुलिस कमिश्नर, सूरत। उन्होंने हिंदी के क्रमिक विकास पर विद्वतापूर्ण अपने विचार रखे। उनके सम्बोधन का इतना सम्मोहन था कि जैसे उन्होंने अपने सम्बोधन से प्रत्येक श्रोता को शब्द बाणों से बाँध दिया हो, परिणामस्वरूप श्री तोमर के सम्बोधन समाप्ति पर 'जय हिन्द' के उद्घघोष के साथ वह हुआ जो तब तक उस सम्मलेन में नहीं हुआ था। सभी श्रोताओं ने तोमर साहब के विचारों पर लगातार पाँच मिनट तक तालियों की गड़-गड़ाहट से पूरे इंडोर स्टेडियम को गूँजा दिया था और जिसे देखकर मैंने मन ही मन बुदबुदाया, "गजब कर दिया तोमर साहब !" निसंदेह वह गूँज और गड़-गड़ाहट अगले दिन 16 सितंबर 2022 के अख़बारों के माध्यम से पूरे सूरत, पूरे गुजरात और पूरे भारत तक पहुँची।

उस सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में माईक संभाला फ़िल्म निर्माता और निर्देशक श्री महेश मांजरेकर साहब ने लेकिन श्री अजय तोमर के विचारों का आकर्षण ऐसा था कि मांजरेकर जी ने मजाकिया अंदाज में खुद को वहाँ आने पर कोसते हुए अपने विचारों को तोमर साहब के विचारों पर ही केंद्रित करने और श्रोताओं से सीधा संवाद करने को प्राथमिकता देना ही उचित समझा।

उस सत्र के तीसरे वक्ता के रूप में उपस्थित श्री संजय द्विवेदी, महानिदेशक, भारतीय जनसंचार संस्थान ने फिल्मों में उर्दू के प्रयोग पर प्रकाश डाला। उस सत्र के अगले वक्ता एवं अध्यक्ष तथा कार्यक्रम के अंतिम वक्ता के रूप में मंच पर उपस्थित डॉ चंद्रप्रकाश द्विवेदी, मशहूर फ़िल्म निर्माता और निर्देशक थे जिन्होंने संस्कृतनिष्ठ हिंदी और उर्दू के सामंजस्य पर प्रकाश डाला।

सम्मलेन में लगभग प्रत्येक वक्ता ने यह भी स्पष्ट करने पर जोर दिया कि वर्तमान समय में राजभाषा विभाग हिंदी को पूर्ण समर्थ बनाने के लिए गंभीर रूप से प्रयासरत है इसीलिए भारत सरकार के प्रत्येक मंत्रालय/विभाग/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम में राजभाषा के पदों के वर्गीकरण और वेतनमान को बढ़ाते हुए यह संदेश दिया है कि राजभाषा के कार्यान्वयन के लिए यह आवश्यक है कि जिसे यह जिम्मेदारी दी जा रही है उसका पद और वेतनमान ऐसा हो कि वो उस कार्यान्वयन के कार्य से जुड़ा रहें अर्थात उसकी खुद की नजरों में उसका मान-सम्मान बना रहे और वह इतना सक्षम भी हो कि फिर दूसरे पदों/वेतनमानों से आकर्षित ही ना हो।

इस तरह इस भव्य और गरिमामय आयोजन का समापन हुआ लेकिन कुछ शब्द हमेशा के लिए याद रहेंगे जैसे श्री ह्रदय नारायण दीक्षित जी ने मंच से अपनी बात कहते हुए खुले मन से यह कहा था कि 'गांधी' कभी नहीं मरा करते। सच में 'गांधी' कभी मर भी नहीं सकते वो हमेशा ज़िंदा रहेंगे हमारे विचारों में, हमारी जीवन शैली में और भारत की मिट्टी में। जय हिन्द !!!

हमारी पत्रिका "कलिका" के पिछले अंक अर्थात 53वें अंक को नराकास - 1 हैदराबाद की तरफ से द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

LOCATION

महालेखाकारों का कार्यालय परिसर, सैफाबाद, हैदराबाद - 500004